मूल्य : 20/-
पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

वर्ष : ४
फरवरी : २०२०, विक्रमी सम्वत् : २०७६
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२०, दयानन्दाब्द : १९५
अंक : ८

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

पं. रामचन्द्र देहलवी
स्मृति : 3 फर.

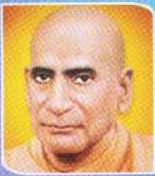
स्वामी श्रद्धानंद
जन्म : 13 फर.

पं. चमूपति
जन्म : 15 फर.

पं. लेखराम
जयंती : 17 फर.

वीर सावरकर
स्मृति : 26 फर.

चंद्र शेखर आजाद
बलिदान : 27 फर.

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा ऋषि जन्मोत्सव व बोधोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की कुछ झलकियां

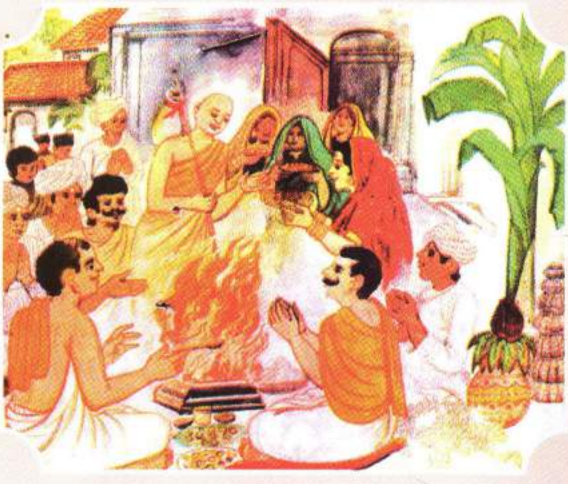

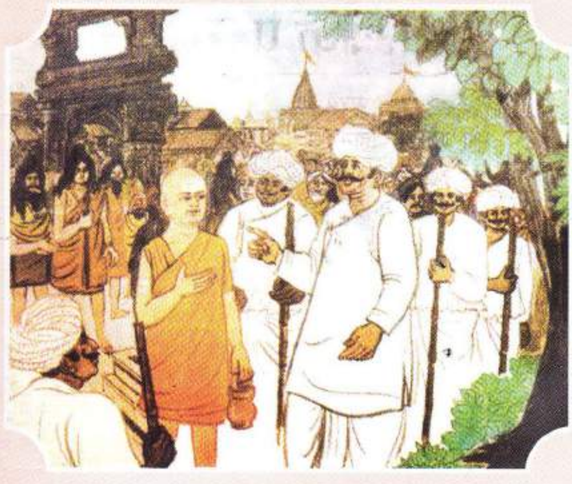

बसंत पंचमी के अवसर पर अखिल भारतीय हिन्दू महासभा दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में बालवीर हकीकत राय के बलिदान दिवस समारोह पर सम्मानित होते हुए आर्य कै. अशोक गुलाटी और अन्य महानुभाव।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्ववार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल

प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी

संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17
Date of Dispatch 12&13 Every Month

मूल्य

एक प्रति : 20/-　वार्षिक : 250/-
पांच वर्ष : 1100/-　आजीवन : 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : गणतंत्र दिवस एवं नेताजी...	2
2.	जीवनबोध का पर्व शिवरात्रि	3
3.	प्रार्थना-प्रवचन : उपसंहार	4-5
4.	आइए जीवन को निखारने का...	6
5.	मैं तो ठहर गया, पर तू कब...	7
6.	आर्यसमाज द्वारा सीएए कानून...	8-9
7.	योग एक चिंतन	10
8.	महापुरुषों को नमन	12-13
9.	समलैंगिकता : भारतीय संस्कृति...	14-15
10.	जन्म दिवस : शहीद सोहनलाल जी	21
11.	समाचार-सूचनाएं	22-23
12.	सुस्वास्थ्य : खांसी जुकाम को कहें...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय
आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

गणतंत्र दिवस एवं नेताजी सुभाषचंद्र बोस

आज भारतवर्ष अपना 71वां गणतंत्र दिवस पूर्ण भव्यता के साथ मना रहा है। गणतंत्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है, जो प्रतिवर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन सन् 1950 को भारत सरकार अधिनियम एक्ट 1935 को हटाकर भारत का संविधान लागू हुआ था। भारत का संविधान 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में बनकर तैयार हुआ एवं 26 जनवरी 1949 को संविधान राष्ट्रपति जी को सौंपा गया था। यह पर्व भारत के छोटे से छोटे स्कूल से लेकर शीर्ष स्तर तक मनाया जाता है, इसकी भव्यता हमें इंडिया गेट के राजपथ पर देखने को मिलती है, जहां भारतीय संस्कृति सभ्यता एवं शौर्य का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। किंतु क्या हम जानते हैं इस गणतंत्र को हासिल करने में कितने ही वीर सपूतों ने अपने प्राण न्यौछावर किये, उन्हीं को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए इस बार प्रधानमंत्री जी ने शहीद स्मारक पर सर्वप्रथम अपनी कृतज्ञता एक कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से उन शहीदों को प्रदान करके गणतंत्र दिवस का आरम्भ किया। किंतु जिस गणतंत्र दिवस को आज हम मना रहे हैं उसकी नींव को सींचने का कार्य बहुत से राष्ट्रभक्त सपूतों ने अपने रक्त से किया था, उन्हीं में एक थे बहुमुखी प्रतिभा के धनी वीर सपूत सुभाष चंद्र बोस। जिन्हें हम नेताजी के नाम से भी जानते हैं। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' को चरितार्थ करने वाले नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को जानकीनाथ बोस एवं प्रभावती जी के घर कटक नामक स्थल पर हुआ था। उन्होंने 1919 में उस समय की सर्वोच्च परीक्षा आइसीएस पास की किंतु विदेशी सरकार के अधीन होकर कार्य करना पसंद नहीं था, अतः स्वदेश लौटकर स्वतंत्रता के लिए कार्य करने लग गए। 1938 में कांग्रेस के अध्यक्ष बने एवं 1939 में भी अध्यक्ष पद के लिए विजयी हुए किंतु गांधी जी के कारण इन्होंने इस्तीफा दे दिया था। 22 जून 1939 को ऑल इंडिया फारवर्ड ब्लाक की स्थापना की, जिस कारण 1940 में इन्हें जेल जाना पड़ा। 4 जुलाई 1943 को आजाद हिन्द फौज की कमान सम्भाली एवं 5 जुलाई को ही सिंगापुर से दिल्ली चलो का नारा दिया। 1945 में एक विमान दुर्घटना में नेताजी क्षतिग्रस्त हो गए, इस दुर्घटना में उनका निधन हुआ था, ऐसा बताया जाता है, किंतु यह निर्विवाद सत्य नहीं है, नेताजी आज भी हमारे हृदय में जीवित हैं। इनके संबंध में गांधी जी ने कहा था कि वे नेताओं के भी नेता थे। आइए उनका श्रद्धापूर्वक स्मरण करके अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करें। ...जय हिंद जय भारत!!

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

गणतंत्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है, जो प्रतिवर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन सन् 1950 को भारत सरकार अधिनियम एक्ट 1935 को हटाकर भारत का संविधान लागू हुआ था। भारत का संविधान 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में बनकर तैयार हुआ एवं 26 जनवरी 1949 को संविधान राष्ट्रपति जी को सौंपा गया था। यह पर्व भारत के छोटे से छोटे स्कूल से लेकर शीर्ष स्तर तक मनाया जाता है, इसकी भव्यता हमें इंडिया गेट के राजपथ पर देखने को मिलती है, जहां भारतीय संस्कृति सभ्यता एवं शौर्य का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। किंतु क्या हम जानते हैं इस गणतंत्र को हासिल करने में कितने ही वीर सपूतों ने अपने प्राण न्यौछावर किये, उन्हीं को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए इस बार प्रधानमंत्री जी ने शहीद स्मारक पर सर्वप्रथम अपनी कृतज्ञता एक कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से उन शहीदों को प्रदान करके गणतंत्र दिवस का आरम्भ किया। किंतु जिस गणतंत्र दिवस को आज हम मना रहे हैं उसकी नींव को सींचने का कार्य बहुत से राष्ट्रभक्त सपूतों ने अपने रक्त से किया था, उन्हीं में एक थे बहुमुखी प्रतिभा के धनी वीर सपूत सुभाष चंद्र बोस। जिन्हें हम नेताजी के नाम से भी जानते हैं। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' को चरितार्थ करने वाले नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को जानकीनाथ बोस एवं प्रभावती जी के घर कटक नामक स्थल पर हुआ था।

जीवनबोध का पर्व शिवरात्रि

डॉ. महेश विद्यालंकार

शिवरात्रि भारत का धार्मिक सांस्कृतिक और महान प्रेरक पर्व है। इसका संबंध शिव भगवान की पूजा उपासना, व्रत एवं संकल्प भावना से है। सभी धार्मिक आस्था वाले इस पर्व को किसी न किसी रूप में बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं। आज जो शिवरात्रि का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा लोक में प्रचलित स्वरूप है वह मात्र बाहरी आडम्बर और रस्म रिवाज तक सीमित हो रहा है। सत्य है कि शिवरात्रि आत्मबोध, सत्यबोध तथा जीवनबोध का पर्व है। पर्व जगाने, सम्भालने व दिशाबोध कराने आते हैं। आज पर्वों की मूल चेतना, उद्‌देश्य, संदेश सत्यस्वरूप विकृत हो रहा है। पर्वों से हम जीवन एवं जगत के लिए कुछ प्रेरणा व सीख नहीं ले पा रहे हैं। शिवरात्रि पर्व परमात्मा के सत्य स्वरूप और जीवन लक्ष्य का संदेश देने प्रतिवर्ष आता है। कल्याणकारी शिव जो बोध कराये उससे मिलने की भावना जागृत करें, वही सच्ची शिवरात्रि है। बाकी तो संसारी और भोगरात्रियां और रात्रियां हमें सुलाने आती हैं। शिवरात्रि जगाने और जीवनबोध कराने आती है। यह आत्म बोध का सार्थक पर्व है।

आर्य समाज के जन्म निर्माण और इतिहास में शिवरात्रि की अति आवश्यक भूमिका रही है। संसार की साधारण घटनाएं महापुरुष के जीवन में परिवर्तन, मोड़ और क्रांति ला देती हैं। मूलशंकर के जीवन में शिवरात्रि सत्यबोध और वैचारिक क्रांति लेकर आयी। वे शिवरात्रि की रात जागने के बाद जीवन भर चैन से नहीं सोये। यदि मूलशंकर के जीवन में सच्ची शिवरात्रि न आती तो वे दयानंद न बनते। ऋषि दयानंद न होते तो आर्य समाज न होता। यदि आर्यसमाज न होता तो विस्मृत वैदिक धर्म, वेद, यज्ञ, समाज-सुधार आदि का सत्य स्वरूप कौन दिखाता? ऋषि ने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदोद्धार, देश, धर्म, मानवता तथा संसार के उपकार के लिए आहुत कर दिया। ऐसा अनोखा निराला विलक्षण सत्य का शोधक, सत्य वक्ता, सत्य का प्रचारक और सत्य पर शहीद होने वाला महापुरुष दुनिया में दूसरा नहीं हुआ है।

ऋषि की विशेषताओं और उपकारों का जितना गुणगान किया जाय उतना कम है। सत्य की ऋषि के ज्ञान बोध का पर्व शिवरात्रि हम सब ऋषि भक्तों, आर्य समाजियों, सभा संगठनों, संस्थाओं आदि के अधिकारियों के लिए आत्म-चिंतन, आत्म-विश्लेषण, कर्तव्य-बोध, सत्य-धर्म आदि के चिंतन मनन का अवसर है। क्या खोया? क्या पाया? ऋषि की विचार धारा के प्रचार और प्रसार के लिए हम क्या कर रहे हैं। ऐसे अवसर सोचने, अपने को बदलने व्रत तथा संकल्प के लिए आते हैं। संसार की सबसे बड़ी मूल्यवान महत्वपूर्ण चीज जीवन है, हम अपने आत्म कल्याण, आत्म उत्थान और जीवन निर्माण के लिए धार्मिक स्थानों, सत्य ग्रंथों एवं महापुरुषों के साथ जुड़ते हैं। यदि हमारे जीवन में सत्य बोध नहीं हुआ, हमने अपने जीवन की बुराईयों, दुर्गुणों, दोषों आदि का दूर नहीं किया, पशुता से देवत्व की प्रवृत्ति नहीं बनायी, जीवन को धार्मिकता, तथा प्रभु के साथ नहीं जोड़ा तो सत्य है कि हमने शिवरात्रि बहिर्जगत में मनाई है। अंर्तजगत में अंधेरा, अज्ञान, स्वार्थ, अहंकार, पशुता आदि भरी रही तो समझना चाहिए कि हम अपने को धोखे और अंधेरे में रख रहे हैं। भोगी, विलासी, दुर्व्यसनी मुंशीराम तपस्वी, त्यागी, बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद बन गये। भोग-विलास तथा वासनाओं के कीचड़ में फंसे अमीचंद अमूल्य हीरा बन गये। गुरुदत्त नास्तिक से आस्तिक बन गये।

यह सम्भव तब हुआ जब उनके हृदय में ज्ञान की अग्नि प्रज्वलित हुई। हमारे ज्ञान, विवेक तथा जीवन में परिवर्तन, सुधार व आकर्षण उत्पन्न नहीं हो पा रहा है। मूल में भूल हो रही है। हमारे जीवन नहीं बन पा रहे। जीवन से ही दूसरे के जीवन की ज्योति जलती है। वेद का अमर संदेश है- 'यो जागार तं ऋचा कामयन्ते' जो जागता है उसे ही सत्य ज्ञान तथा आत्म ज्ञान प्राप्त होता है। शिवरात्रि आत्मज्ञान का पर्व है। सत्य को जानने और खोजने का पर्व है। जड़ पूजा से चेतन पूजा की ओर चलो। बाहर दी दुनिया से अंदर की दुनिया में आओ। उठो! जागो! अपने जीवन तथा जगत को संभालो। जीवन बड़ी तेजी से व्यर्थ की बातों, विवादों, उलझनों और भोगों में गुजरा जा रहा है। मानव जीवन को प्राप्त करने के बाद भी जीवन को उद्‌देश्यहीन बनाकर जिया तो उपनिषद के शब्दों में महती विनिष्ठ, इससे बढ़कर जीवन की हानि व विनाश और कुछ भी नहीं है।

- **गुरुकुल गाय और यज्ञ भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं।** - **स्वामी आर्यवेश**
- **आर्ष शिक्षा से ही वैदिक संस्कृति की रक्षा हो सकती है।** - **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती**
- **वेद में विज्ञान सूत्र रूप में विद्यमान है।** - **डॉ. महावीर मीमांसक**

प्रार्थना-प्रवचन : उपसंहार

अब प्रार्थना-प्रवचन के उपसंहार की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।
- प्रबंध संपादक

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

(गतांक से आगे...)

कस्मैदेवाय हविषा विधेम, की शृंखला के चार मंत्रों के पश्चात् अब प्रथम विश्वानि देव से आरम्भ करने पर षष्ठ मंत्र 'प्रजापतेन त्वदेतानि' आता है। इस मंत्र का पूर्वार्द्ध स्तुति परक है और उत्तरार्द्ध प्रार्थनापरक है। पूर्वार्द्ध में प्रभु को संसार के पालक-पोषक के रूप में स्मरण करके भक्त कहता है कि भगवन्! आप तो आप्तकाम, रसेन तृप्त: न कुतश्चनोन:, न कोई कामना, न कोई न्यूनता, आप ने तो अपार कृपा दया से सारे संसार को, उसके धन, ऐश्वर्य आदि को हमारे ही लिए बनाया है, सो जब भी हम जो भी कामना करें उसे आप कृपा करके पूर्ण कर दें, हमें शरीर, आत्मा, धन आदि के ऐश्वर्यों का स्वामी बना दें ।

सातवां मंत्र है- 'स नो बन्धु: जनिता'-प्रभु हमारे भाई हैं, मित्र हैं, हमारे माई-बाप हैं। वे हमारे भले बुरे के विधाता हैं। एक और आनन्द यह है कि जब हम प्रभु के गुण कर्म स्वभाव में तन्मय होते हैं तो हमें परम आनन्द की उपलब्धि होती है ।

आठवां मंत्र, अंतिम मंत्र मूलत: प्रार्थना का मंत्र है। भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि जगदीश्वर! मेरे संबंध में आप सर्वाधिक जानते हैं। सो प्रभो! कृपा करके सुपथ पर ले चलिए और कुटिलता रूप पाप कर्मों से दूर कर दीजिए। आप की स्तुति का फल हमें सुपथ की प्राप्ति और कुटिलता से निवृत्ति मिले। प्रथम मंत्र में दुरित से निवृत्ति और भद्र की प्राप्ति की प्रार्थना की गयी थी। अब अंतिम मंत्र में कुटिलता से निवृत्ति और सुपथ प्राप्ति की प्रार्थना की गयी है। आदि में प्रार्थना और अंत में प्रार्थना, प्रार्थना से आरम्भ और प्रार्थना से समाप्ति। सो इन आठों मंत्रों का संक्षिप्त नामकरण प्रार्थना मंत्र ठीक ही है। 'आदिरत्येन सहेता' पाणिनि मुनि का सूत्र है। आदि में प्रार्थना अन्त्य की प्रार्थना से जुड़कर प्रार्थना ही प्रार्थना हो गई है।

ध्यान या उपासना का अपना अलग फल है। किन्तु, ध्यान प्रार्थना का स्थानापन्न नहीं हो सकता। यह भी ठीक है कि प्रार्थना ध्यान का स्थानापन्न नहीं है। वस्तुत: स्तुति हो या प्रार्थना अथवा ध्यान या उपासना, कोई किसी का स्थान नहीं ले सकता। सबकी अपनी अपनी अलग-अलग उपयोगिता है।

आजकल ध्यान का बड़ा प्रचार हो रहा है। विपश्शना से लेकर सहज और सरल मार्ग तक, कितने प्रकार और कितने गुरु, आकलन करना आसान नहीं है। आज के दिन तो ऑफिसों के बड़े आफिसर, काम-तनाव-रुपये के बोझ से बोझिल व्यवसायी, अनेक प्रकार के शारीरिक और मानसिक समस्याओं में ग्रस्त लोग ध्यान का सहारा लेकर न्यूनाधिक लाभ उठा रहे हैं। ध्यान एक प्रकार का उपचार हो रहा है। यह सब अच्छे लक्षण हैं। आध्यात्मिक साधना का नास्तिकों ने, विकासवादियों ने, साम्यवादियों ने, बड़ा उपहास किया है। किन्तु आज तो योग और ध्यान, योगासन और प्राणायाम सभी का रोग

ध्यान या उपासना का अपना अलग फल है। किन्तु, ध्यान प्रार्थना का स्थानापन्न नहीं हो सकता। यह भी ठीक है कि प्रार्थना ध्यान का स्थानापत्र नहीं है। वस्तुत: स्तुति हो या प्रार्थना अथवा ध्यान या उपासना, कोई किसी का स्थान नहीं ले सकता। सबकी अपनी अपनी अलग-अलग उपयोगिता है। आजकल ध्यान का बड़ा प्रचार हो रहा है। विपश्शना से लेकर सहज और सरल मार्ग तक, कितने प्रकार और कितने गुरु, आकलन करना आसान नहीं है। आज के दिन तो आफिसों के बड़े आफिसर, काम-तनाव-रुपये के बोझ से बोझिल, व्यवसायी, अनेक प्रकार के शारीरिक और मानसिक समस्याओं में ग्रस्त लोग ध्यान का सहारा लेकर न्यूनाधिक लाभ उठा रहे है। ध्यान एक प्रकार का उपचार हो रहा है। यह सब अच्छे लक्षण हैं। आध्यात्मिक साधना का नास्तिकों ने, विकासवादियों ने, साम्यवादियों ने, बड़ा उपहास किया है।
किन्तु आज तो योग और ध्यान, योगासन और प्राणायाम सभी का रोग निवारण औ स्वास्थ्यरक्षण में प्रयोग-उपयोग हो रहा है। यह सब बहुत अच्छा है, शुभ है। और भी अच्छी बात यह है कि प्राय: सभी पद्धतियां अपना आधार महर्षि पतंजलि के राज योग को ही बताते हैं। स्वाभाविक है कि मानव की अनुसंधान और अन्वेषण प्रिय बुद्धि योग के आयामों में नयी रीतियों का भी अनुसंधान करने में अग्रसर होने का प्रयास तो अवश्य ही करेगी।

निवारण और स्वास्थ्यरक्षण में प्रयोग-उपयोग हो रहा है।

यह सब बहुत अच्छा है, शुभ है और भी अच्छी बात यह है कि प्रायः सभी पद्धतियां अपना आधार महर्षि पतंञ्जलि के राज योग को ही बताते हैं। स्वाभाविक है कि मानव की अनुसंधान और अन्वेषण प्रिय बुद्धि योग के आयामों में नई रीतियों का भी अनुसंधान करने में अग्रसर होने का प्रयास तो अवश्य ही करेगी। सम्भव है विज्ञान के नूतन आलोक में कुछ और उपादेय उपलब्ध हो सके। फिर भी स्तुति और प्रार्थना का अपना मानसिक मनोवैज्ञानिक महत्व है। हृदय-ध्यान का सहयोगी एवं सम्पूरक-परिपूरक है। श्वेताश्वतर उपनिषद् के ऋषि लिखते हैं-

नीहारधूमार्कानिलानलानां, खद्योत विद्युत्स्फटिकशशीनाम्। एतानि रूपाणि पुरः सराणि, ब्रह्मण्यभिव्यक्तिकराणि योगे।।

श्वेता. 2-11

जब ध्यान योग की साधना सफल होने लगती है तो साधक को नेत्र बंद रहने पर भी, अपने सामने कभी धुआं, कभी कुहरा, सूर्य, वायु, स्फुलिंग, जुगनू, विद्युत, स्फटिक, चन्द्रमा आदि का दर्शन होता है। साधकों का अनुभव है, कभी-कभी अति सुखद प्रकृति छटा, अपनी भी प्रतिमूर्ति आदि दृष्टिगोचर होती है। इससे बड़ी शान्ति हलकापन अनुभव में आता है।

इन सारी अनुभूतियों, शान्ति के बाद भी प्रार्थना की उपयोगिता अलग ही ध्यान में आती है। जब उपासक पूरी तन्मयता पूरी निष्ठा के साथ, हृदय के अवगुण्ठनों को खोलकर प्रार्थना करता है, विह्वल होकर, अकिंचन के रूप में याचना करता है-

1. शरण में आये है, हम तुम्हारी, दया करो है दयालु भगवन्। सुधारों बिगड़ी दशा हमारी, दया करो है दयालु भगवन्॥ न हम में विद्या, न हम में बुद्धि न हममें शक्ति, न हममें भक्ति। तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन्॥
2. हे दयामय! आपका हमको सदा आधार हो। आप के भक्तों से ही भरपूर यह परिवार हो।। छोड़ देवे काम की और क्रोध को मद लोभ को। शुद्ध और निर्मल हमारा सर्वथा आचार सो॥ जय पिता, जय जय पिता, हम जय तुम्हारी गा रहे। रात दिन घर में हमारे आप का जयकार हो।॥
3. हे नाथ! अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पावे। जब इस तरह की भावनाओं में हृदय रम जाता है तब उसकी अनुभूति का स्वरूप अलग ही होता है। ध्यान में शान्ति मिलती है, मन मस्तिष्क हल्का होता है। किन्तु प्रार्थना स्तुति-कीर्तन का अलग सुख है। सौ पचास बार, कोई गिनती नहीं, कोई नियम नहीं, तन्मय होकर बोलिए- तू है सच्चा पिता सारे संसार का, ओ३म् प्यारा। तू ही, तू ही, है रक्षक हमारा॥ और ऐसे कीर्तनों का आनंद उठाइए।

किसी भी कार्य, यज्ञ, संस्कार, सत्संग में निष्ठापूर्वक ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना अवश्य करनी चाहिए। धारणा-ध्यान कठिन है, ऊंची साधना है, एकांत, शांति की आकांक्षा होती है। किंतु प्रार्थना आसान है, रास्ते में हों, सवारी पर हों, मन ही मन गुनगुनाने लगिये, पचीस पचास बार बोलिए और आनंद उठाइए। संध्या में समर्पण से पूर्व ऋषि ने लिखा है- हे ईश्वर दयानिधे!

भवत्कृपयानेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

ऋषि ने जप को प्रथम स्थान पर लिखा है । हम जप को प्रायः भुला ही बेठे हैं। सौ दो सौ बार ओ३म् का जप, गायत्री का जप, विश्वानिदेव के जप का प्रयास करें।

इन पंक्तियों को लिखने का इतना ही उद्देश्य है कि ध्यान बड़ी अच्छी साधना है किन्तु ईश्वर की स्तुति प्रार्थना भी नियमपूर्वक दोनों समय अवश्य करना चाहिए। केवल ध्यान को ही पर्याप्त नहीं समझना चाहिए। यह सामान्य मनुष्यों के लिए है। उच्च कोटि के सिद्ध साधकों के लिए जब 'तज्जपँस्तदर्थ भावनम्' का रूप सिद्ध होने लगता है, उस स्थिति में साधक का ध्यान-स्तुति प्रार्थना उपासना सब समन्वित होकर एकाकार हो जाता है। उस समय यह क्रियाभेद रह ही नहीं जायेगा। उस समय भक्ति की क्रिया मात्र उपासना का ही रूप हो जाता है।

इस रूप में इन मंत्रों का पाठ, इनका चिंतन-मनन, इनके अर्थों पर विचार के साथ परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव में अपने मन को निमग्न करने का अधिकाधिक प्रयास करना उचित है। ○○

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाया जाए।

■ प्रबंध संपादक : 9871798221, 7011279734

आइए जीवन को निखारने का प्रयत्न करें !!

संतोष नंदवानी
मयूर विहार, फेस-1, दिल्ली

किसी ने सत्य ही कहा है- घर एक मंदिर है अपने घर को मंदिर जैसा पवित्र बनाएं। घर में कलह-क्लेश का वास न हो। ओ३म् नाम का जाप हो। महापुरुषों का आगमन और बुजुर्गों का आशीर्वाद हमेशा साथ हो। स्वयं पुण्य कर्म करें और बच्चों को भी आदर्श प्रेरणा प्रदान करें।

वास्तव में मनुष्य को माया के खोट ने जकड़ा हुआ है, उसे दुनिया याद रहती है, उसे दुनिया के मालिक का तो ध्यान ही नहीं रहता। जैसे सोने में से खोट निकालने के लिए उसे आग में तपाया जाता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी पुरुषार्थ रूपी तप में तपना पड़ता है। तभी वह इस माया रूपी खोट से मुक्त होकर शुद्ध बुद्ध हो जाता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने इसी आधार पर माया के खोट को निकालने के अमूल्य सूत्रों को निर्धारित किया। जिनमें से कतिपय सूत्र इस प्रकार है-

ईश्वर ही परम सत्य - ईश्वर तर्क से नहीं, श्रद्धा और भक्ति से मिलता है। सत्य का अंकुर तभी पल्लवित पुष्पित होता है, जब उसे श्रद्धा के जल से सींचा जाता है। वह सर्वत्र व्यापक है। उसके नियम, कानून-व्यवस्था यहां तक कि न्याय व्यवस्था भी समान है। वह चीटीं से हाथी तक सबका पालन हारा है। दुख में, सुख में, संयोग-वियोग में कभी हमारा साथ नहीं छोड़ता। अतः भगवान का धन्यवाद करना कभी न भूले।

महापुरुषों का आगमन और बुजुर्गों का आशीर्वाद हमेशा साथ होना चाहिए। स्वयं पुण्य कर्म करें और बच्चों को भी आदर्श प्रेरणा प्रदान करें। वास्तव में मनुष्य को माया के खोट ने जकड़ा हुआ है, उसे दुनिया याद रहती है, उसे दुनिया के मालिक का तो ध्यान ही नहीं रहता। जैसे सोने में से खोट निकालने के लिए उसे आग में तपाया जाता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी पुरुषार्थ रूपी तप में तपना पड़ता है। तभी वह इस माया रूपी खोट से मुक्त होकर शुद्ध बुद्ध हो जाता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने इसी आधार पर माया के खोट को निकालने के अमूल्य सूत्रों को निर्धारित किया।

जीवन का परम उद्देश्य है ईश्वर को पाना - उस परम धाम तक पहुंचना ही मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य है। उस परम पवित्र मलिक के हाथों अपना सर्वस्व सौंप दें। कोई चिन्ता तुम्हें दबा नहीं सकती। उस परमानन्द से आनंदित होने का उपाय उस आनन्द स्वरूप परमेश्वर का अंश बन जाना ही है। परन्तु उसके लिए जीवन में कई परीक्षाओं से गुजरना पड़ेगा जिनसे भयभीत नहीं होना चाहिए।

उद्देश्य की पहचान- अपने जीवन का संचालक स्वयं बने। उद्देश्य को पहचान कर जीवन को मूल्यवान बनाओ। प्रत्येक इंसान का शरीर स्वयं उसकी आत्मा का सितार है। यह उसी पर निर्भर है, वह मधुर संगीत निकालता है अथवा कड़वाहट की धुन। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं विधाता है। अतः स्वयं का उद्धार करने वाले दीपक बनो। अपना मनोबल बनाए रखें क्योंकि यह जीवन की अनमोल शक्ति है। खुशी पाने के लिए अपने अंर्तचेतना में परिवर्तन लाओ। विचारों को बदलो सकारात्मक सोच रखते हुए, मुस्कुराते हुए प्रतिदिन उसका धन्यवाद करते रहो, सर्वदा उस पर विश्वास रखो, प्रतिदिन उसका स्मरण करो।

प्रेम परिवार को बांधता है- जिंदगी एक सौंदर्य से पूर्ण उपवन है। भगवत कृपा से, इंसान को प्रेम धागे से परिवार को बांधने की प्रेरणा मिली है। यदि यह प्रेम धांगा टूट जाए तो बिखर जाते हैं यह सब माला के जैसे। अतः उसे सजाओ, संवारों और प्रेम जल से इसकी सिंचाई करो। यदि ऐसा नहीं करोगे तो जिंदगी का सौंदर्य नष्ट होते देर नहीं लगेगी। किसी भी ऊंचे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीवन में धैर्य, दृढ़ विश्वास एवं कठोर परिश्रम का होना जरूरी है। जिस घर में 'संगच्छध्वं सवंदध्वम्' सूत्र का बोलबाला है, वह घर स्वर्ग है। परिवार में पुरुष रुद्र रूप है, महिला शिवा स्वरूप है, दोनों में तालमेल होने से जिंदगी आनंदित होती है। मां की ममता की छांव में इंसान अपने अस्तित्व का प्रथम सोपान चढ़ने में सक्षम हो पाता है। मां ही समग्र जीवन की धुरी है, उसकी ममता की छाया में ही दया स्नेह एवं सही भावना का सही दिशा में संचार होता है। मां की भाषा मौन की भाषा है। मां सुख से नहीं हृदय की तान पर संगीत प्रारम्भ करती है और यहीं से इंसान ऊंचाइयों को छूना प्रारम्भ करता है।

मानव निर्माण में माता-पिता ही तो एक छत्रछाया के रूप में प्रतिविंब होते हैं। तभी तो कहा है- धरती से भारी होती है मां की ममता और आकाश से ऊंचे होते हैं पिता के अरमान। अत: सर्वदा मां की ममता और पिता के अरमानों का सम्मान करो।

जिंदगी में नित्य नयापन खोजें- अपने समय का, बल का, अपने धन का, वाणी का, दृष्टि का हर स्थिति में सदुपयोग करने वाले बनों। नवीन विचार, नवीन जीवन शैली अपनाएं। भय को जीतना सीखें। सदुपयोग की प्रवृत्ति को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। ई.सी.जी. की मशीन की तरह जिंदगी में विभिन्न प्रकार की लहरें (सुख, दुख, मान-अपमान, लाभ-हानि) आती जाती दिकाई देगी लेकिन जो उन सबको ठोकर मारकर आगे बढ़ते जाते है, सफलता उनके कदम चूमने लगती है। उन्हीं के लिए भगवान के आशीर्वाद और वरदान सदैव काम करते हैं। परिश्रम और पुरुषार्थ से ही विजय श्री प्राप्त होती है। अपने जीवन की वाटिका को पुरुषार्थ के सुमनों से सजाकर मुस्कुराते रहो।

परमात्मा तो भावों के ही भूखे हैं। वो तो हमेशा हृदय से निकली सच्ची पुकार को सुनते हैं, अत: उसे हृदय से पुकारो। दुखों में-सुखों में, विकट परिस्थितियों में व ही सदा अपने गले से लगाता है। उसके चरणों में अपने मन को, प्रेम-शांति और एकाग्रता के भाव से समर्पित कर दें, उस सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपाएं स्वयं ही बरसने लगेगी। ईश्वर से जब भी मांगे 'सुमति' ही मांगे। सुबुद्धि ही हमारे जीवन का बहुमूल्य धन है इसीलिए वो इससे संबंधित 'गायत्री मंत्र' को अत्यधिक महत्व दिया गया है। सिमरन एवं सत्संग को जीवन का आवश्यक अंग बनाएं तथा नि:स्वार्थ संसार का सुख भोगने हेतु ये सारी इंद्रिया देने वाले उस परमपिता को पल-पल धन्यवाद करें।

अगर इन सब बहुमूल्य सूत्रों के आधार पर अपना जीवन व्यतीत करें तो कोई कारण नहीं कि हमारी जीवन बगिया पुष्पित एवं पूर्णतया प्रफुल्लित न हो। आइए इस सुमार्ग को अपनाएं। ईश्वर हमारी मनोकामनाओं को सुमंगल एवं आनंदपूर्ण बनाएं। **ओ३म् शांति!!**

मैं तो ठहर गया, पर तू कब ठहरेगा!

कहा जाता है कि जीवन चलने का नाम है अत: चलते रहो। चरैवेति, चरैवेति। चलना, निरंतर आगे बढ़ना ही जीवन है, रुकना या पीछे हटना मृत्यु है। लेकिन निरंतर चलते रहने के लिए, आगे बढ़ते रहने के लिए एक चीज और भी जरूरी है-रुकना। निरंतर चलते रहने के लिए रुकना, विश्राम करना या ठहरना भी अनिवार्य है। चलना वस्तुत: दो प्रकार का होता है। एक शरीर का चलना या गति करना और दूसरा मन का चलना या गति करना। मन, जो शरीर को चलाता है, उसे नियंत्रित करता है आध्यात्मिक दृष्टि से उसकी गति को नियंत्रित करना भी अनिवार्य है। एक रुकने का अर्थ भौतिक शरीर की गति अर्थात कर्म से मुंह मोड़ना है लेकिन दूसरे रुकने का अर्थ मन की गति को विराम देना है। मन जो अत्यंत चंचल है, जब मन रुक जाता है, तो वह शांत-स्थिर होकर पुनर्निर्माण में सहायक होता है। जब मन तेज भागता है अथवा गलत दिशा में दौड़ता है, तो ठहराव की जरूरत होती है। कीचड़ युक्त पानी जब स्थिर हो जाता है, तो उसमें घुली मिट्टी नीचे बैठ जाती है और स्वच्छ पानी ऊपर तैरने लगता है। मन को रोकने पर भी यही होता है। विचारों का परिमार्जन होने लगता है। कार्य करता है हमारा शरीर, लेकिन उसे चलाता है हमारा मस्तिष्क और मस्तिष्क को चलाने वाला है हमारा मन। शरीर को सही गति प्रदान करने के लिए मन को रोकना और उसे सकारात्मकता प्रदान करना अनिवार्य है।

जब बुद्ध और अंगुलिमाल का आमना-सामना हुआ, तो दोनों तरफ से ठहरने की बात होती है। अंगुलिमाल कड़ककर बुद्ध से कहता है, ठहर जा। बुद्ध अत्यंत शांत भाव से कहते हैं, मैं तो ठहर गया हूं, पर तू कब ठहरेगा? एक आश्चर्य घटित होता है। बुद्ध की शांत मुद्रा सारे परिवेश को शांत-स्थिर कर देती है। उस असीम शांति में अंगुलिमाल भी आप्लावित हो जाता है। वह ठहर जाता है और दस्यु वृत्ति त्याग कर बुद्ध की शरण में आ जाता है। मन की हिंसक वृत्ति का विनाश होने का प्रारंभ ही वास्तविक ठहराव है। जब व्यक्ति पूर्ण रूप से ठहर जाता है, उसके मन से उद्विग्नता तथा द्वंद्व मिट जाता है तभी समता का उदय होता है। मन के ठहराव का अर्थ है नकारात्मक भावों के स्थान पर सकारात्मक भावों का उदय। सकारात्मक भावों के उदय के साथ ही व्यक्ति आनंद के साम्राज्य में प्रवेश करता है। आनंद के लिए जीवन की गति तथा विचारों के प्रवाह को नियंत्रित कर उन्हें संतुलित करना जरूरी है। यही आध्यात्मिकता है। यही वास्तविक आनंद अथवा परमानंद है।

सीताराम गुप्ता

आर्यसमाज द्वारा सीएए कानून पर भारत सरकार का सर्वसम्मत समर्थन

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

आर्यसमाज के जिला स्तरीय संगठन 'आर्य उपप्रतिनिधि सभा, देहरादून' की ओर से एक सभा व गोष्ठी पं. दीनदयाल पार्क निकट घंटाघर पर आयोजित हुई जिसमें आर्यसमाज के अनेक प्रतिनिधि, आर्यसमाजी विद्वान एवं नेता सम्मिलित हुए। इस सभा को आर्य विद्वानों एवं नेताओं ने सम्बोधित किया। सभा का संचालन जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, देहरादून के प्रधान श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्य ने किया। उन्होंने बताया कि सी.ए.ए. कानून क्या है? उन्होंने कहा कि इस कानून में पाकिस्तान, बंग्लादेश तथा अफगानिस्तान से भारत आये वहां के बहुसंख्यों के अमानवीय अत्याचारों से पीड़ित अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को भारत की नागरिकता देने का प्रावधान है। इस कानून के अनुसार सन् 2014 तक भारत आये लोगों को नागरिकता दी जायेगी। इस कानून में भारत के किसी नागरिक को देश से बाहर भेजने का प्रावधान नहीं है।

इस कानून के विरोध में देश में जो संगठित हिंसा व आगजनी आदि की घटनायें हुई हैं वह सब सुनियोजित थी जिनके पीछे देश के असामाजिक एवं देश विरोधियों का हाथ था। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री सहित उनकी पार्टी के विरोधी लोग ही मुख्यत: सीएए विरोधी आन्दोलन में सम्मिलित रहे हैं। सीएए तथा एनआरसी के विरोध को विद्वानों ने दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि सीएए विरोधी आन्दोलन का विरोध एवं इसका सीएए का समर्थन सभी राष्ट्रवादी शक्तियों को मत-मतांतरों एवं राजनीति से ऊपर उठकर करना चाहिये। वक्ताओं ने सीएए के विरोध को देशहित व मानवीयता के विरुद्ध बताया गया। वक्ताओं द्वारा कहा गया कि यदि देश विरोधी शक्तियों का पुरजोर विरोध न किया जाये तो इससे देश का वातावरण खराब होने के साथ निर्दोष लोगों के जान व माल को खतरा होता है। अत: आर्यसमाज द्वारा एक स्वर से सीएए व एनआरसी कानून का समर्थन एवं इसके विरोधियों का विरोध किया गया।

सभा व गोष्ठी का आरम्भ गायत्री मंत्र व प्रार्थना मत्रों के पाठ से आरम्भ किया गया। सभा का संचालन करते हुए जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, देहरादून के यशस्वी प्रधान श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्य ने कहा कि आर्यसमाज के अनुयायी देश में हो रही गतिविधियों का अपनी राष्ट्रवादी विचारधारा के अनुसार विचार करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि सभी देशवासियों व राजनीतिक दलों को देश व समाज हित में ही काम करने चाहिये। उन्होंने बताया कि आर्यसमाजों की जिला प्रतिनिधि सभा इस ओर विशेष ध्यान रखती है और काम करती है। श्री मौर्य ने सभा के अतीत के कार्यों का उल्लेख भी किया। उन्होंने कहा कि देश की केन्द्रीय सरकार ने देश के नागरिकता कानून में संशोधन कर उसका सुधार किया है। हम इस नये कानून के समर्थन में देश की सरकार को मजबूत करने व उसका

सी.ए.ए. कानून पाकिस्तान, बंग्लादेश तथा अफगानिस्तान से भारत आये वहां के बहुसंख्यों के अमानवीय अत्याचारों से पीड़ित अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को भारत की नागरिकता देने का प्रावधान है। इस कानून के अनुसार सन् 2014 तक भारत आये लोगों को नागरिकता दी जायेगी। इस कानून में भारत के किसी नागरिक को देश से बाहर भेजने का प्रावधान नहीं है। इस कानून के विरोध में देश में जो संगठित हिंसा व आगजनी आदि की घटनायें हुई हैं वह सब सुनियोजित थी जिनके पीछे देश के असामाजिक एवं देश विरोधियों का हाथ था। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री सहित उनकी पार्टी के विरोधी लोग ही मुख्यतः सीएए विरोधी आन्दोलन में सम्मिलित रहे हैं। सीएए तथा एनआरसी के विरोध को विद्वानों ने दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि सीएए विरोधी आन्दोलन का विरोध एवं इसका सीएए का समर्थन सभी राष्ट्रवादी शक्तियों को मत-मतांतरों एवं राजनीति से ऊपर उठकर करना चाहिये। वक्ताओं ने सीएए के विरोध को देशहित व मानवीयता के विरुद्ध बताया गया।

समर्थन करने के लिए यहां उपस्थित हुए हैं। हमारे समर्थन का मुख्य कारण यह है कि यह कानून देश हित व मानवता के हित में है। सभी देशवासियों को इस नयें कानून का पूरे हृदय व भावनाओं के साथ समर्थन करना चाहिये। श्री मौर्य ने कहा कि समाज व देश में जागरूकता पैदा करने के लिये इस गोष्ठी को किया जा रहा है। श्री मौर्य ने आगे कहा कि देश के नागरिक सीएए के देशहित के पक्ष को भलीभांति समझते हैं। वह उचित व अनुचित को जानते हैं। अधिकांश नागरिक जागरूक हैं। उन सबको बाहर आकर सरकार का समर्थन करना चाहिये जिससे राष्ट्र विरोधी शक्तियों का क्षय एंवं पराभव हो। वक्ताओं ने कहा कि हमें सीएए के लाभों व गुणों को गहराई से जानना चाहिये और उसका प्रचार करना चाहिये। सबने कहा कि हम सीएए का पुरजोर समर्थन करते हैं। श्री मौर्य ने बताया कि गोष्ठी की समाप्ति के बाद हमारा एक प्रतिनिधि मण्डल जिलाधिकारी महोदय के कार्यालय में जाकर सीएए और एनआरसी के समर्थन में प्रधानमंत्री को सम्बोधित एक ज्ञापन जिला अधिकारी महोदय को देगा।

जनपद की आर्य उपप्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री भगवान सिंह राठौर ने प्रधानमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन को सभा में पढ़कर सुनाया। उन्होंने बताया कि वह इस प्रस्ताव को सभी समाजों की ओर से प्रधानमंत्री जी को प्रेषित करा रहे हैं। वयोवृद्ध नेता श्री पी.डी. गुप्ता ने कहा कि समाज में होने वाली गलत बातों का पुरजोर विरोध किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हमें सीएए के समर्थन में पहले आगे आना चाहिये। हमारे विलम्ब के कारण समाज विरोधी लोगों व उनके समर्थकों ने देश की सम्पत्ति को बड़े स्तर पर हानि पहुंचाई है। श्री गुप्ता ने कहा कि सच्चे व सभ्य नागरिकों का मौन भी उनकी कमजोरी बनता है।

अत: हम सीएए कानून का विरोध करने वालों का विरोध और सरकार का समर्थन कर रहे हैं। श्री गुप्ता ने यह भी कहा कि देश को आजादी दिलाने में सबसे अधिक योगदान आर्यसमाज व उसके अनुयायियों का रहा है। उन्होंने कहा कि हमारा कर्त्तव्य है कि हम आर्यसमाज का दृष्टिकोण देश व समाज के सामने रखें। श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्य ने कहा कि जब समाज जागता है तो देश में चेतना आती है। श्री मौर्य ने आगे कहा कि आर्यसमाज ईश्वर के नियमों और वेद के अनुसार चलता है। अपने प्रिय राष्ट्र भारत की रक्षा करना हम आर्यसमाज के अनुयायियों को परम पावन कर्तव्य है। हमारे देश के असंख्य युवकों ने देश की आजादी के लिये बलिदान किया है। इसके बाद श्री राजकुमार भंडारी प्रधान आर्यसमाज लक्ष्मणचैक, श्री ओम् प्रकाश मलिक कोषाध्यक्ष आर्यसमाज सुभाषनगर, श्री अरविन्द आर्य प्रशासक आर्यसमाज डाकपत्थर, श्रीमती सरिता नेगी आर्यसमाज लक्ष्मणचैक, श्री अतरसिंह राजपूत आर्यसमाज लक्ष्मणचैक, श्री सुशील चन्द्र जी च्योला, श्री नवीन भट्ट आर्यसमाज धामावाला, श्री यशवीर आर्य राजपुर आदि अनेक लोगों ने भी गोष्ठी में विचार व्यक्त किये और सीएए कानून के समर्थन में अनेक बातें कहीं।

आर्यसमाज के विद्वान श्री ललित मोहन पांडेय जी ने सीएए कानून के पक्ष में विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज देश की अग्रणीय संस्था रही है और आज भी है। उन्होंने बताया कि ऋषि दयानन्द ने देश में प्रचलित अविद्या को दूर करने के लिए वेदों का प्रचार किया था और समाज से अंधविश्वासों एवं कुरीतियों का उन्मूलन करने का सर्वाधिक प्रशंसनीय प्रयत्न किया था। पांडेय जी ने कहा कि हम ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के अनुयायी हैं। हम ऋषि के वेदानुकूल विचारों का का पालन करते हैं। हमें गोष्ठी में विद्वानों के विचारों के अनुरूप व्यवहार करना है। उन्होंने सीएए कानून का समर्थन किया। आर्यसमाज धामावाला, देहरादून के पूर्व मंत्री एवं युवा आर्य नेता श्री नवीन भट्ट जी ने कहा कि देश सुरक्षित रहेगा तो सब सुरक्षित रहेंगे। देश की सुरक्षा के लिये ही हम सीएए कानून का समर्थन कर रहे हैं।

प्रेरक वचन

- प्राणायाम करो, चित्त निर्मल होगा, इसको स्थिर रखने के लिए बार-बार प्रयत्न करो, यही अभ्यास है। चित्त की शुद्धता तथा परमात्मा के योग की तुलना में विषयों के सुख को तुच्छ समझो, यही वैराग्य है। इन दोनों साधनों से अपने भीतर बल ग्रहण करो तथा प्रभु की अनन्य भक्ति के अधिक योग्य बनो। इस प्रकार चित्त को रिक्त करके निर्मल परमात्मा का ध्यान करो, यही पूजन की विधि है।
- इस पृथ्वी तथा द्यौ में जितने श्रम के कार्य हैं, उनकी पराकाष्ठा स्वाध्याय है, उस व्यक्ति के लिए, जो समझकर स्वाध्याय करता है। अत: स्वाध्याय भली प्रकार करना चाहिए।

योग एक चिंतन

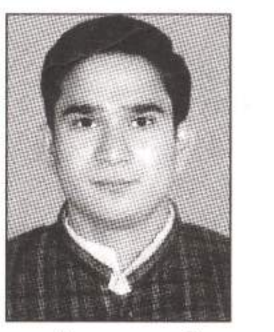

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

योग शब्द 'युज् समाधौ' धातु प्रत्यय से सिद्ध होता है। योग का अर्थ है- योग: चित्त वृत्ति निरोध:। अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध योग के द्वारा होता है। सामान्यतया हम कह सकते हैं कि योग हमारे मन में जो विकार उत्पन्न होते हैं उनको दूर करने का श्रेष्ठ और उत्तम उपाय है। मनुष्य यदि ईश्वर भक्ति में मन को लगाना चाहता है तो उसे योग की शरण में जाना ही पड़ेगा क्योंकि जब वह भक्ति करेगा तो मन को शांत करने के लिए योगाभ्यास करना ही पड़ेगा। इसलिए कहा जाता है- समत्वं योगं उच्यते। यदि हमअपने कर्मों को श्रेष्ठता की ओर ले जाना चाहते हैं तो भी हमें योगाभ्यास करना ही चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं- योग: कर्मसु कौसलम् अर्थात् कर्मों में कुशलता ही योग है। निष्काम भावना से कर्म करना योग की श्रेणी में आता है, इसलिए योगी मनुष्य कभी भी फल की चिंता किये बिना कर्म करते हैं और अपने मन को परोपकार में लगाते हैं। यह श्रेणी योग कहलाती है। इसलिए योगी मनुष्य को सुख प्राप्त होता है।

योग के संबंध में अन्य विद्वानों के विचार- 1. सांख्य दर्शन के अनुसार- पुरुष प्रकृत्योर्वियोगोपि योगस्यमिधीयते अर्थात् पुरुष एवं प्रकृति के पार्थक्य को स्थापित कर पुरुष का स्व स्वरूप में अवस्थित होना ही योग है। 2. विष्णु पुराण के अनुसार- योग: संयोग इत्युक्त: जीवात्मा अर्थात् जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतया मिलना ही योग है। 3. बौद्ध धर्म के अनुसार- कुशल चितैकग्राता योग: अर्थात् कुशल चित्त की एकाग्रता योग है।

उपरोक्त विचारों से सिद्ध होता है कि योग वास्तव में मानव जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी और आवश्यक है। यदि मनुष्य योग नहीं करेगा तो सुखी नहीं रह सकता। हमेशा दु:खी ही रहेगा क्योंकि वह वास्तविकता से हमेशा वंचित रहेगा। मूल से दूर रहना ही दु:ख का कारण है। मन को वश में करना और शरीर को स्वस्थ रखना अत्यंत कठिन है। हमारा मन हमेशा एकांत से भागता है। भक्ति और चिंतन में लगता ही नहीं है तो उसके लिए योग के माध्यम से ही हम मन को वश में कर सकते हैं। यदि मन व्याकुल होता है तो समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं और उनका समाधान कहीं नहीं मिलता। व्यर्थ के विचार हमारे मन को ईश्वर भक्ति से भटका देते हैं और मन गलत मार्ग पर ही जाता है और मनुष्य का पतन हो जाता है। ध्यान योग के द्वारा हम अपने मन को शांत कर सकते हैं। भगवान कृष्ण गीता में बताते हैं-

शुचों देशे प्रति:भव्य स्थिरमासनमात्मन:।
नात्युच्छित नाति नीच चैलाजिन कुशोन्तरम्।।
तत्रेकाग्र मन: कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रिय:।
उपविश्यासने मुज्जयायोगमात्म विशुद्धमे।।

1/6/11/12 गीता

अर्थात्- एकांत स्थान पर जाकर आरामदायक आसन पर बैठकर, आसन ऊंचा न हो न नीचा। पवित्र स्थान में स्थित हो। ऐसे आसन पर बैठकर योगाभ्यास करें। मनुष्य यदि विचार करे तो उसे सुख कहा मिलता है, सुख मिलता है ईश्वर भक्ति और योग साधना में, लेकिन हम इसके विपरीत भोग-विलास को सुख मानकर अपने आपको गर्त में डाल देते हैं। परमात्म स्वरूप का यदि हम चिंतन करें तो हम योग की वास्तविक अवस्था में पहुंच सकते हैं, क्योंकि चिंतन करने से विचार और मन पवित्र होता है। पवित्र मन के द्वारा योग और भक्ति की जाती है।

शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों पर बढ़ते तनाव को योगाभ्यास से कम किया जा रहा है। योगाभ्यास से बच्चों को शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत बनाया जा रहा है। स्कूल व महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा विषय में योग पढ़ाया जा रहा है। वहीं योग-ध्यान के अभ्यास द्वारा विद्यार्थियों में बढ़ते मानसिक तनाव को कम किया जा रहा है। साथ ही साथ इस अभ्यास से विद्यार्थियों की एकाग्रता व स्मृति शक्ति पर भी विशेष सकारात्मक प्रभाव देखे जा रहे है। आज कम्प्यूटर, मनोविज्ञान, प्रबंधन विज्ञान के छात्र भी योग द्वारा तनाव पर नियंत्रण करते हुए देखे जा सकते है।

शिक्षा के क्षेत्र में योग के बढ़ते प्रचलन का अन्य कारण इसका नैतिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव है आजकल बच्चों में गिरते नैतिक मूल्यों को पुन: स्थापित करने के लिए योग का सहारा लिया जा रहा है। योग के अंतर्गत आने वाले यम में दूसरों के साथ हमारे व्यवहार व कर्तव्य को सिखाया जाता है, वहीं नियम के अंतर्गत बच्चों को स्वयं के अंदर अनुशासन स्थापित करना सिखाया जा रहा है। OO

चक्रवत् परिवर्तते सुखानि च दुःखानि च

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

सर्वदा परिवर्तनशीलेऽस्मिन् जगति क्रमेण सुखानि दुःखानि चायान्ति यन्ति च। सुखानन्तरं दुःखं दुःखानन्तरं सुखं चायाति। यथा कालश्चक्रवत् परावर्तते, षड्ऋतवः प्रतिवर्ष क्रमेण आयान्ति यन्ति च, तथैव सुखानि दुःखान्यपि। दैवेन जीवो जन्मपर्यन्तं केवलमेकमेव सोढुं नादिष्टः क्रमेण उभेऽपि सुखदुःखेऽनुसरतः। क्षणं क्षणं याः घटना विश्वेऽमन् घटिता भवन्ति, न चिराय तिष्ठन्ति। अत एव नित्यं नूतनत्वम् अलौकिकचमत्कारमावहन्ति। रत्नाभरणालङ्-कृतायाम् शय्यायां च पूर्वकाले अशेत् स एकस्मिन् समये संकलकलाकलनेन कालेनाक्रान्तो भूत्वा भिक्षया कालं यापयति। एकमेव यत् नानाकष्टग्रस्तः नष्टवैभवः शत्रुभिः पराभूतः दुःखेन कालं यापयति, स एव भविष्ये समागते समये सकलानि कष्टानि तीर्त्वा धनवैभवमंडितः सुखानि प्राप्स्यति।

अखिलविश्वस्येतिहासे अनेकान्युदाहरणानि सन्ति, यैः सुखदुःखयोः जीवने चक्रवत् परिभ्रमणं ज्ञायते। अस्माकं साहित्ये सत्यवादिहरिश्चन्द्रस्येयं कथा इदं मतं समर्थयति। नानासमृद्धिभिरिद्धोत्रपेन्द्रो हरिश्चन्द्रः कालेन चोदितः स्वप्ने विप्राय स्वराज्यं दानं कृत्वा यथा पाश्चात् दुःखं लब्धवान्, तत्सर्वं विदितमेव। सः स्वकर्त्तव्यपालनाय वह्निज्वालाश्चितायां भूमौ कुस्सितं कर्माङ्गीचकार। धर्मेण परीक्षितः सः तदनु पुनः स्वप्रतिष्ठामवाप्य स्वमहिम्ना इन्द्रपदं समलश्चकार। श्लोकविपद्विरामः रामाः शैशवे राजसुखं भुवत्वा यौवने पद्भ्यां कण्टकाकीर्णे निर्जनवने पर्यटन् नानाक्लेशमवाप, पश्चादयोध्यायाः साम्राज्य सुख मनुभवत्। जगज्जननी सीताऽपि अष्टयां रामेण सह क्लेशं लब्धवती।

न केवलं मनुष्या अपि तु सर्वेऽपि प्राणिनः पशुपक्षिवृक्षादयः सुख-दुःखयोरनुभवं समानरूपेण समानक्रमेणैव कुर्वन्ति। राष्ट्रस्येतिहासेऽपि सुख-दुखयोश्चक्रं परावर्तते। रोम साम्राज्यम् एकदा उन्नतेः शिखरमधिरोहत्; किन्त्विदानीं न तस्य त्रयादि एव। प्रकृतेः इयं चक्रवत् परिभ्रमणात्मिका गतिर्लोकप्रर्वतनाय समुचिता एव। अन्यथा, यदि कोऽप्येकः सदा सुखी भवेत् कदापि दुःखं नानुभवेत्, तदा सो दयदानदक्षिण्यादिसद्गुणैः रहितो भववेत्।

त्रिदशानां स्वर्गवासिनां देवानां कृतेऽपि अयमेव चक्रवत् परिभ्रमणनियमः परिवर्तते। पुण्यप्रभावेण देवा दिवि कल्पतरोः कुसुमालङ्करणं धारयन्त क्षीणे पुण्ये पुनर्मर्त्यलोकं प्राप्य कण्टकान् चिन्वन्ति। ग्रहनक्षत्रतारका-णामपि इयमेव गतिर्विद्यते। रात्रौ गगने प्रकाश्यमानाः नयनानन्दकराः असंख्यतारकाः प्रभातवेलायां अपगतपान्थः क्वचिदन्तराले विलीयंते। निदाधे आतपेन यो भास्करो भुवनं दहति, स एव शीते हिमेन खिद्यते। निसर्गोऽपि सुखदुःखयोश्चक्रे पतति। मधुमासे भवशून्यां मधु पिवन्तो मधुकरा शीतकाले विपरीतां दशां भजन्ते। नद्यो ग्रीष्मकाले कार्श्यमावहन्त्यो वर्षतौ वनं प्राप्ताः दिगन्तरालं गंभीरघोषेण पूरयन्तः समग्रां वसुधामाप्लावयन्ति।

इत्यं सुखदुःखयोः सततं सरति लोकजीवने उपादेयत्वत्मधिकं दृश्यते। वैषम्यपरम्परयैव सुखस्य दुःखस्य च अनुभवो भवति। उक्तश्च कालिदासेन मेघदूते-

कस्याप्यन्तं सुखमुपनत दुःखनेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥

OO

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **विद्या :** जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यंत पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उनसे यथा योग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम 'विद्या' है।
- **अविद्या :** जो विद्या से विपरीत है, भ्रम, अंधकार और अज्ञान रूप है, इसलिए इसको 'अविद्या' कहते हैं।
- **सत्पुरुष :** जो सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।
- **सत्संग :** जिसे करके झूठ से छूट के सत्य की ही प्राप्ति होती है, उसको 'सत्संग' और जिसे करके पापों में जीव फंसे, उसको 'कुसंग' कहते हैं।
- **तीर्थ :** जितने विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियतादि उत्तम कर्म हैं, वे सब 'तीर्थ' कहाते हैं क्योंकि इसे करके जीव दुःखसागर से तर जाते हैं।

पं. रामचन्द्र देहलवी शास्त्रार्थ महारथी

स्मृति : 3 फरवरी
शत्-शत् नमन

आर्य समाज के विद्वान पंडित रामचन्द्र देहलवी पुरानी दिल्ली के फव्वारे पर खुलेआम विद्वानों से शास्त्रार्थ किया करते थे। हमारे दुर्भाग्य से या सौभाग्य से भारत में कई मतावलम्बी हैं। उनमें मुख्य रूप से ईसाई, मुसलमान, आर्यसमाजी व सनातनधर्मी हैं। बाकी और जो हैं उनकी इतनी मुख्यता नहीं है। मुसलमानों का, खुदा की इबादत करने का अपना एक तरीका है। ईसाइयों व मुसलमानों में कोई विशेष भेद नहीं है, थोड़ा ही भेद है इसलिए मैं उन्हें मुसलमानों से जुदा नहीं करता हूं। सनातन धर्म और आर्यसमाज में भी कोई फर्क नहीं है। हम चाहते हैं कि जो थोड़ा सा भेद उनमें और हममें है वह न रहे। आर्य जगत में पंडित रामचंद्र जी देहलवी गजब के तार्किक थे, सभी मजहब के लोगों के साथ शास्त्रार्थ किये और सभी को अपने तार्किक शक्ति से पछाड़ा- एक शास्त्रार्थ में मौलाना सनाउल्ला ने कहा-पंडित जी जहां से आपके राम खत्म होते हैं, वहीं से हमारे मुहम्मद साहब शुरू होते हैं इसलिए अब आप को राम का नाम छोड़कर मुहम्मद का जाप करना चाहिए। देहलवी जी बोले- शाबास मौलाना साहब शाबास! मरहबा!! किन्तु मौलाना साहब आप बीच में ही क्यों रुक गए- आगे भी कहो। मौलाना बोले-आगे क्या है यह आप ही कह दीजिए। पंडित जी बोले- जहां आपके मोहम्मद साहब समाप्त होते हैं, वहीं से दयानंद शुरू हो जाते हैं, इसलिए मुहम्मद साहब को छोड़ कर दयानंद के गीत गाओ। आर्य समाज को पुनः शास्त्रार्थ आरंभ करना होगा।

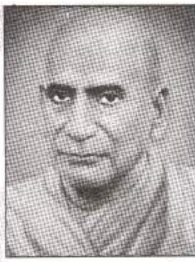

जन्म : 13 फरवरी
शत्-शत् नमन

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पंजाब प्रांत के जालंधर जिले के तलवान ग्राम में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता, लाला नानक चंद, ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा शासित यूनाइटेड प्रोविंस में पुलिस अधिकारी थे। उनके बचपन का नाम वृहस्पति और मुंशीराम था, किंतु मुंशीराम सरल होने के कारण अधिक प्रचलित हुआ। पिता का ट्रांसफर अलग-अलग स्थानों पर होने के कारण उनकी आरम्भिक शिक्षा अच्छी प्रकार नहीं हो सकी। लाहौर और जालंधर उनके मुख्य कार्यस्थल रहे। एक बार आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक-धर्म के प्रचारार्थ बरेली पहुंचे। पुलिस अधिकारी नानकचंद अपने पुत्र मुंशीराम को साथ लेकर स्वामी दयानन्द का प्रवचन सुनने पहुंचे। युवावस्था तक मुंशीराम ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। लेकिन स्वामी दयानन्द जी के तर्कों और आशीर्वाद ने मुंशीराम को दृढ़ ईश्वर विश्वासी तथा वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बना दिया। आर्य समाज में वे बहुत ही सक्रिय रहते। वह गुरुकुल कांगड़ी व अन्य कई गुरुकुलों के संस्थापक थे। वे शुद्धि आंदोलन के प्रणेता थे। 23 दिसम्बर को उन पर मधान्ध द्वारा वार कर दिया गया जिससे वह शहीद हो गए। स्वामी जी की याद में भव्य रैली 25 दिसम्बर को निकाली जाती है।

पं. चमूपति एम.ए.

जन्म : 15 फरवरी
शत्-शत् नमन

पंडित चमूपति का जन्म 15 फरवरी, 1863 ई. में बहावलपुर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता का नाम मेहता बसंदा राम था। बालक का नाम उन्होंने चम्पतराय रखा था। पं. चमूपति जी ने मिडिल परीक्षा में अपनी रियासत में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। मैट्रिक की परीक्षा पास करके वे बहावलपुर के सादिक ईजर्टन कॉलेज में प्रविष्ट हो गए। कॉलेज में उन्होंने उर्दू काव्य लिखना आरम्भ कर दिया। सर्वप्रथम उन्होंने सिखों के धर्मग्रंथ 'जपजी' का उर्दू में काव्यानुवाद किया। एमए की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर आप उसी रियासत के एक मिडिल स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गये। मेहता चम्पतराय के विचारों में (एमए) करने के उपरांत भी स्थिरता नहीं आ पाई थी। प्रारंभ में वे सिख धर्म की ओर आकृष्ट हुए तो फिर शनैः शनैः नास्तिक बन गये। इसी बीच उन्हें स्वामी दयानंद के ग्रंथों के अध्ययन का सुयोग सुलभ हुआ। परिणाम स्वरूप ईश्वर के प्रति उनकी आस्था तो जम गई किंतु वे शंकर वेदांत की ओर झुकने लगे। 15 जून 1939 को उनका स्वर्गवास हो गया। पंडित जी ने अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया। पं. चमूपति असाधारण कोटि के विद्वान थे। हिंदू, उर्दू, और अंग्रेजी इन तीनों विषयों पर उनका समान अधिकार था।

रक्त साक्षी पं. लेखराम

जयंती : 17 फरवरी
शत्-शत् नमन

आर्य मुसाफिर पं. लेखराम का जन्म 8 चैत्र, संवत् 1915 (1858 ई.) को झेलम जिला के तहसील चकवाल के सैदपुर गांव (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। उनके पिता का नाम तारा सिंह एवं माता का नाम भाग भरी था। उन्होंने आरंभ में उर्दू-फारसी पढ़ी। बचपन से ही स्वाभिमानी और दृढ विचारों के थे। एक बार उनको पाठशाला में प्यास लगी, मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगी। मौलवी ने जूठे मटके से पानी पीने को कहां। उसने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत मांगी और न ही जूठा पानी पिया। सारा दिन प्यासा ही बिता दिया। मुंशी कन्हैयालाल अलाख्धारी की पुस्तकों से उनको स्वामी दयानंद सरस्वती का पता चला। लेखराम जी ने ऋषि दयानंद के सभी ग्रंथों का स्वाध्याय आरंभ कर दिया। सत्रह वर्ष की उम्र में वे सन् 1875 में पेशावर पुलिस में भरती हुए और उन्नति करके सारजेंट बन गए। इन दिनों इन पर 'गीता' का बड़ा प्रभाव था। स्वामी दयानंद सरस्वती से प्रभावित होकर उन्होंने 1937 में पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। 17 मई सन् 1880 को उन्होंने अजमेर में स्वामी जी से भेंट की। लेखराम जी ने सन् 1884 में पुलिस की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। अब उनका सारा समय वैदिक धर्मप्रचार में लगने लगा। स्वामी पर उन द्वारा लिखा जीवनवृत्त पढ़ने योग्य है। लेखन के दौरान उन पर वार किया गया था जिससे उनका प्राणांत हो गया। उनका कहना था आर्यसमाज से तहरीर और तकरीर का कार्य बंद नहीं होना चाहिए।

वीर सावरकर

स्मृति : 26 फरवरी
शत्-शत् नमन

वीर सावरकर का जन्म भारत के महाराष्ट्र राज्य के नाशिक जिले के भांगुर गांव में हुआ था इनके पिता का नाम दामोदर पंत सावरकर और माता का नाम राधाबाई था जब वीर सावरकर महज 9 साल के ही थे तो इनकी माता का हैजे की बीमारी से देहांत हो गया था और फिर माता की मृत्यु के पश्चात 7 साल बाद प्लेग जैसी भयंकर बीमारी के फैलने के कारण इनके पिता भी इस दुनिया को छोड़कर चले गये। इनका लालन पालन इनके बड़े भाई गणेश और नारायण दामोदर सावरकर तथा बहन नैनाबाई की देखरेख में हुआ। बचपन से वीर सावरकर पढ़ने-लिखने में तेज थे जिसके चलते आर्थिक तंगी के बावजूद इनके भाई ने इन्हें पढ़ने के लिए स्कूल भेजा। 1901 में वीर सावरकर ने शिवाजी हाईस्कूल से नासिक से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। बचपन से ही लिखने का शौक रखने वाले वीर सावरकर ने अपने पढ़ाई के दौरान कविताएं भी लिखना शुरू कर दिया था। इनका विवाह 1901 में ही यमुनाबाई के साथ हुआ जिसके बाद इनके आगे की पढ़ाई का खर्च की जिम्मेदारी इनके ससुर ने उठाया। वीर सावरकर ने पहली बार 1905 में दशहरा के दिन विदेशी कपड़ों की होली चलायी जो की एक तरह से पूरे देश में अंग्रेजी वस्तुओं के विरोध की आग पूरे देश में फैल गयी। अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ भारत को आजाद कराने के लिए उन्हें अंडमान (कालापानी) में घोर यातनाएं झेलनी पड़ी, परंतु वह अपने पथ से कभी विचलित नहीं हुए।

क्रांतिकारी योद्धा चंद्रशेखर आजाद

बलिदान : 27 फरवरी
शत्-शत् नमन

क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आजाद का वास्तविक नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था। इनका निधन 1931 में फरवरी के अंतिम सप्ताह में हुआ! जब आजाद गणेश शंकर विद्यार्थी से मिलने सीतापुर जेल गए तो विद्यार्थी ने उन्हें इलाहाबाद जाकर जवाहर लाल नेहरू से मिलने को कहा, चंद्रशेखर आजाद जब नेहरू से सरदार भगत सिंह की फांसी रुकवाने के लिए मिलने आनंद भवन गए तो उन्होंने चंद्रशेखर की बात सुनने से भी इन्कार कर दिया। गुस्से में वहां से निकल-कर चंद्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ एल्फ्रेड पार्क चले गये। वे सुखदेव के साथ आगामी योजनाओं के विषय में बात ही कर रहे थे कि पुलिस ने उन्हें घेर लिया, अपने बचाव में उन्होंने अपनी जेब से पिस्तौल निकालकर गोलियां दागनी शुरू कर दी। दोनों ओर से गोलीबारी हुई। जब चंद्रशेखर के पास मात्र एक ही गोली रह गई तो उन्हें सामना करना मुश्किल लगा। आजाद ने पहले ही प्रण किया था कि वह कभी भी जिंदा पुलिस के हाथ नहीं आएंगे। इसी प्रण को निभाते हुए उन्होंने वह बची हुई गोली खुद को मार ली। जिस पार्क में उनका निधन हुआ था उसका नाम परिवर्तित कर 'चंद्रशेखर आजाद पार्क' और मध्य प्रदेश में जिस गांव में वह रहे थे उसका धिमारपुर नाम बदलकर आजादपुरा रखा गया।

समलैंगिकता : भारतीय संस्कृति के माथे पर कलंक

वर्तमान भौतिकता प्रधान युग में पाश्चात्य संस्कृति में अंधे हुए कुछ कामातुरों द्वारा 'विवाह' जैसे पवित्र पुनीत कार्य को जो एक सामाजिक अनुष्ठान है, जो संबंधों में निश्चिंतता प्रदान करता है, जिसमें दोनों (लड़का-लड़की) दम्पति बनकर अपना वंश चलाते है ऐसी संस्था जो हमारे ऋषियों-मुनियों द्वारा समाज को व्यवस्थित व मर्यादित बनाने के लिए स्थापित की गई थी, को भी तोड़ने का प्रयास किया जा रहा है और हजारों-लाखों वर्षों से समाज को मर्यादा में रखकर विकास और प्रगति की ओर ले जाने वाली इस परिवार रूपी संस्था को विकृत मनोवत्तियों के पनपने के कारण विनष्ट किया जा रहा है। हम अपनी संस्कृति से आज विमुख होते जा रहे हैं। भावों और उद्वेगों के प्रवाह में निर्वाध होकर बहना 'मानव संस्कृति' नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि समलैंगिता अथवा समलिंगी विवाह जैसे शब्दों का हमारी संस्कृति में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यह घृणित, अप्राकृतिक, अनैतिक और मानसिक विकृति का दुष्परिणाम और केवल यौनाचार है जो न केवल वैदिक संस्कृति पर, अपित मानवीय संस्कृति पर कुठाराघात है। इसका परिणाम निर्विवाद रूप से दुख और पतन है और जो लोग इस विकृति के समर्थक, पक्षधर और निर्णयकारक है वे स्वयं इस मनोविकार से ग्रसित हैं तथा अपनी विकृति को सारे समाज पर थोपकर सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण को दूषित करना चाहते हैं। इसके प्रसार से न सामाजिक मर्यादाएं सुरक्षित रहेंगी, न पारिवारिक संबंधों में पवित्रता रहेगी, न संस्थाएं शुद्ध-चरित्र रह पाएंगी अर्थात समाज का प्रत्येक वर्ग इससे प्रभावित होगा, जिससे सदाचार समाप्त होकर चहुंओर दुराचारियों का बोलबाला होगा, समस्त निर्मल वातावरण धूमिल हो जाएगा।

कितने अपराध और कितनी समस्याएं उत्पन्न हो जाएंगी इसका आप और हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते ठीक वैसे ही जैसे एकाध कॉन्वेंट स्कूल भारत में जब अंग्रेजों के मूर्धन्य लार्ड मॅकाले ने खुलवाए और भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा के नाम पर संस्कृति व संस्कार ही बदलने का तुच्छ सा प्रयास किया और हमारे पूर्वजों द्वारा इनका विरोध न करने पर परिणामस्वरूप आज की जो स्थिति है उससे आप चिरपरिचित है, हमारी भावी पीढ़ी अपनी संस्कृति व संस्कारों से शून्य होती जा रही है। इसी प्रकार इस तरह की विकृतियों का व उसके पक्षधरों का विरोध न करने पर समाज की क्या स्थिति होगी अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। अभी तक तो गर्भ निरोधक के उपायों का परिणाम भोग ही रहे हैं, सैकड़ों शारीरिक रोग व मानसिक रोग पनप रहे हैं इसके बाद स्थिति और भी भयावह हो जाएगी। लड़कियां तो आज भी हमारे देश में असुरक्षित हैं इसके बाद लड़कों को भी अपहरण व बलात्कार का शिकार होने से बचाया न जा सकेगा। समाज का जो व्यवस्थित ताना-बाना हमारे ऋषियों ने बुना है वह क्षीण हो जाएगा। गहस्थ रूपी संस्थाए हमारे देश से नष्ट हो जाएंगी। जरा विचार करें अपनी प्राचीन पुरातन संस्कृति का जिसका बोलबाला पूरे विश्व में था यही नहीं सम्पूर्ण विश्व का गुरू हमारा देश व विश्व की सिरमौर हमारी संस्कृति रही है। और आज भौतिक चकाचौंध और पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने के कारण मनुष्य नीचता की भी मर्यादा भूल गया है।

पहले क्या आज भी मनुष्य जब कोई गलत काम करता है तो उसे कुत्ते व गधे आदि जानवरों की उपमाएं दी जाती हैं किंतु समलैंगिक रूपी इस मनोविकृति वाले इंसान को किसकी उपमा देंगे क्योंकि इतनी नीच व घृणित विकृति तो पशुओं में भी नहीं पाई जाती। ये लोग तो पशुओं से भी ज्यादा गिरे हुए हैं। ये लोग समलैंगिकता के पक्ष में मानव स्वतंत्रता और मानवाधिकार का तर्क देते हैं, किन्तु यह तर्क नहीं, तर्काभास है। यदि सहमतिपूर्वक किए जाने वाले अश्लील और अनैतिक कार्यों को मानवीय स्वतंत्रता माना जाता है और समानता तथा मानव अधिकार से जोड़कर देखा जाता है तो इसके अंतर्गत तो सभी स्वैच्छिक यौन संबंध, वेश्यावृति, पशु मैथुन, स्वैच्छिक आत्महत्या, रिश्वतखोरी आदि अनेक स्वतंत्रताएं भी आती हैं इसी का नाम स्वतंत्रता है तो यौन संबंधों के लिए विवाह पर 18 वर्ष तक का सीमा निर्धारण भी क्यों है? स्वतंत्रता के नाम पर उपरोक्त सभी प्रकार विकृतियों का भी ये लोग समर्थन करने लगेंगे यही नहीं समलैंगिक विवाह को मान्यता दी जाती तो कल को पशुओं के साथ विवाह करने की भी मान्यता दी जाए ऐसा भी प्रयास इस प्रकार की दूषित मनोवृति वाले लोग करेंगे तो क्या संसद इसको भी मान्यता प्रदान करेगी?

इस प्रकार की विकृत सोच को वैदिक संस्कृति ही नहीं बल्कि पाश्चात्य जगत के पैगम्बर, जीसस क्राइस्ट, आदि ने भी बाईबिल आदि तथा कथित धर्म ग्रन्थों में भी इसका कहीं कोई उल्लेख नहीं है। इस प्रकार की प्रणित विकृति के पक्षधर क्या अपने परिवार के सदस्यों के विवाह समलिंगियों से करना

स्वीकारेंगे? यदि स्वीकारेंगे तो शायद वे भूल चुके हैं कि यदि उनके माता-पिता भी इस प्रकार का विवाह करते तो क्या उनका जन्म हो पाता? ऐसे लोग ही प्रकृति विरुद्ध बाते करके स्वयं को विकसित कहते हैं। क्या कामातुर होना, धोखेबाज होना, असभ्य व संस्कारहीन होना, बेहया, मर्यादाविहीन होना ही विकास की परिभाषा है? पूरा का पूरा वामपंथ की राह पर चलना ही विकास है? इससे क्या देश या राष्ट्र खुशहाल होगा? क्या इसके द्वारा वंश वृद्धि सम्भव है? कदापि नहीं।

हमारी संस्कृति की भव्य गौरव गरिमा को नष्ट करने के लिए पाश्चात्य जगत जी जान से जुटा हुआ है पूर्व कथित जितने भी वैचारिक प्रदूषण हैं चाहे वह टीवी के विषय हो या विभिन्न प्रकार के यौनाचारों के विषय में हो जैसे हस्तमैथुन, लिव इन रिलेशनशिप, बाल यौन शोषण आदि हमारी संस्कृति को प्रदूषित करने वाले समस्त विचार इन नीच प्रवृति के लोगों द्वारा फैलाए जाते हैं फिर जो लोग इनके फैलाए इस मकड़ जाल में फंसते जाते हैं उनकी मदद करते हैं इन्हें कानूनी मान्यता दिलाने की। एक बड़ा तंत्र अंतराष्ट्रीय स्तर पर इस काम को अंजाम देता है ताकि विदेशों से आए उनके पर्यटकों को भारत में इस प्रकार के घृणित कार्य करने पर भी सभी प्रकार से सुरक्षा मिल सके। दूसरी तरफ उपरोक्त सभी प्रकार की यौनशोषण करने की स्वतंत्रता गर्भ निरोधक साधनों को बेचने वाली कम्पनियों के हितों के लिए भी काम करती है क्योंकि सरकार इन उद्योगियों व व्यवसायियों के चंगुल में फंसी हुई है इसलिए उनको लाभ पहुंचाने हेतु उनके हितकारी काम करने में आपत्ति नहीं जताती। इसके साथ-साथ आज इन पामरों द्वारा इंटरनेट पर ऐसे कुकृत्यों को बढ़ावा देने वाली लगभग 20,000 से भी अधिक काम वासना भड़काने वाली वेबसाइट भरी हुई हैं। आज बच्चों के हाथों में लैपटॉप, मोबाइल, कम्प्यूटर आदि इंटरनेट के माध्यम से वे इस प्रकार की वेबसाइटों को डाउनलोड कर देखते हैं जिससे उनका पौरुषत्व छोटी उम्र में ही नष्ट हो रहा है और मानसिकता विकृत होती जा रही है। एड्स जैसी खतरनाक बिमारियां उत्पन्न हो रही है। इन विदेशियों की यह चाल है ताकि भारतीय संस्कृति का समूल नष्ट हो जाए। इन वेबसाइटों पर समलैंगिक संभोग तो दिखाते ही हैं, साथ ही पाश्विक प्रवृत्तियों से परे पशुओं के भी साथ संभोग करते नर-नारी को दिखाया जाता है। इन्हें देखकर किस देश का बच्चा सुयोग्य नागरिक बन पाएगा? जरा विचार करो। यह अप्राकृतिक होने के साथ-साथ असामान्य व्यवहार भी है। मानव मनोविज्ञान की दृष्टि से इस प्रकार से विकृत मानसिकता वाला व्यक्ति कभी भी शारीरिक तो क्या मानसिक दष्टि से भी उन्नत नहीं हो सकता। मैं इंटरनेट पर डाली गई इस प्रकार की पोर्न वेबसाइट्स की घोर निंदा करता हूं जिसमें एनिमल एंड वूमेन तथा मेन एंड एनीमल आदि के रिलेश्नस दिखाए जाते हैं जिनमें समलैंगिक रिलेश्न दिखाए जाते हैं या अन्य यौनाकर्षण जैसी एडल्ट फिल्में डाली गई हैं।

हमें इनका आज से ही व सदैव विरोध करना चाहिए क्योंकि इस प्रकार की घृणित मान्यता से न तो परिवार ही बढ़ पाएंगे, न ही वैवाहिक जीवन सुखमय संसार बन पाएगा। भारतीय संस्कृति, परम्परा, परिवार रूपी संस्था तथा समाज की मर्यादाएं सब विनष्ट हो जाएंगी। समाज में कामाचार बढ़ेगा जिससे तनाव एवं कलह का वातावरण बढ़ता है। और भावी युवा पीढ़ी अपनी इच्छाओं की पूर्ति न होने पर आत्महत्या जैसे कुकृत्य करने में विवश हो जाती है या नशे की लत की शिकार होती है और अपने प्रेम संबंधों को बनाए रखने के लिए चोरी, हत्या जैसे अपराध कर धन जुटाने का प्रयास करने को आतुर हो जाती है। इस प्रकार उनकी शिक्षा, योग्यता, खेल, ज्ञान-विज्ञान, भाषा साहित्य दर्शन की योग्यता प्राप्त करने का, अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ को बनाने का मधुरिम समय सैक्स की अंधी गलियों में भटकने में बीत जाएगा तो उनका व देश का भविष्य क्या होगा? क्या माता-पिता, शिक्षक इन परिस्थितियों का सामना कर सकेंगे।

हमारी परम, पावन, पुण्यमयी वैदिक संस्कृति में शारीरिक वेगो को न रोकने का तथा मानसिक वेग को रोकने की शिक्षा दी जाती है। क्योंकि शारीरिक वेगों को रोकने से शरीर की हानि होती है अर्थात शरीर रोगी हो जाता है और मानसिक वेगों को न रोकने से मनुष्य अपराधी बन जाता है। इसके लिए योग आसन, प्राणायाम, धारणा ध्यान आदि हमारी गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में प्रारम्भ से ही बच्चों को सिखाई जाती थी ताकि उनका सर्वांगीण विकास संभव हो। यही सच्चे अर्थों में 'मानवीय संस्कृति' और इससे भी ऊपर 'देव संस्कृति' तथा ऋषि संस्कृति है। जो लोग कामुकता की संतुष्टि से ऊपर नहीं उठ सके हैं, इसी को अपने जीवन का लक्ष्य मान बैठे हैं वे चाहे संन्यासी, लेखक वक्ता, अभिनेता, बुद्धिजीवी कलाकार कोई भी क्यों न हो, वे देव संस्कृति और ऋषि संस्कृति की महिमा, महानता और मूल्य क्या जाने वास्तव में जो लोग समलैंगिक विवाह का समर्थन करते हैं उनको ये समझना चाहिए कि यह भारतीय संस्कृति नहीं है बल्कि यूरोपीय राक्षसी संस्कृति की दूषित मानसिकता की परिकल्पना है।

■■ गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)

वैदिक संस्कृति के पुनरुद्धारक : महर्षि दयानन्द

वेदों की सुरसरिता को इस धराधाम पर पुन: लाने का सम्पूर्ण श्रेय इस युग में यदि किसी को जाता है-तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती हैं। महर्षि की दृष्टि में वेदों की अपार महिमा है। क्योंकि यह साक्षात् सच्चिदानन्दस्वरूप प्रभु की दिव्य वाणी है। जिसके लिए महर्षि मनु ने कहा- 'सर्वज्ञानमयो हि स:' (मनु. 2/7) अर्थात् वेद निश्चय से सर्वज्ञानमय है। तभी तो महर्षि लिखते हैं- 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' (आ.स. नियम-3) तथा सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। अर्थात् सब सत्य विद्याओं का मूल वेद है और वेद का आदिमूल परमेश्वर है। भगवान् वेदव्यास जिस प्रकार उद्घोपणा करते हैं-

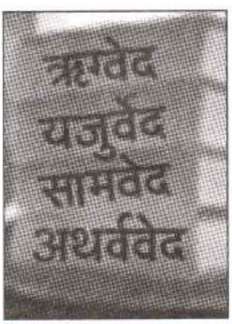

वेदा में परमं चक्षुः वेदा में परमं बलम्।
वेदा में परमं धाम वेदा में ब्रह्म चोत्तमम् ।।

(महाभारत शान्तिपर्व 63/175)

अर्थात् वेद मेरे परम नेत्र हैं, वेद मेरे परम बल हैं, वेद मेरे परमधाम हैं और वेद मेरे परब्रह्म का प्रत्यक्ष वाड्मय उत्तम स्वरूप है। इसी सत्य का साक्षात्कार करके महर्षि ने उद्घोषणा की कि- 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। अर्थात् 'वेदा में परमो धर्म:' महर्षि मनु ने तो कहा ही है- 'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' (मनुस्मृति 2/6)- सम्पूर्ण वेद धर्म के मूल है।

सब वेद धर्म के मूल है, आधार है, प्रतिष्ठा है। मूल बिना वृक्ष नहीं हो सकता है पर वृक्ष विना मूल नहीं हो सकता है। नींव बिना भवन नहीं हो सकता है पर भवन बिना नींव के, बिना बुनियाद के नहीं हो सकता। वह वृक्ष नष्ट हो जाता है जिसका मूल नष्ट हो जाता है। वह भवन धराशायी हो जाता है, जिसकी नींव, जिसकी बुनियाट हिल जाती है, उखड़ जाती है।

इस मूल को ठीक-ठीक किसी ने जाना पहचाना तो वह कोई और नहीं महर्षि दयानन्द सरस्वती हैं, जिसने हमें हमारे मूल से पुन: जोड़ने का प्रयास किया। जिसने हमें हमारी प्राचीन मूल संस्कृति से जोड़ा- जिसे हम प्राय: भूले हुए थे या भूल रहे थे- वह हमारी आद्य संस्कृति है- 'वैदिक संस्कृति' अर्थात् वेदों की संस्कृति।

उस बालक मूलशंकर को हम कैसे भूल सकते हैं- जिसने चौदह वर्ष की आयु में अपने आदि मूल को पाने के लिए बालसुलभ व्रत किया, तर्क किया और अपनी श्रद्धा व आस्था को सतत् दृढ़ किया-और परिणाम स्वरूप वही वालक मूलशंकर 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' के नाम से विश्वप्रसिद्ध हुआ। जिसके लिए पंडित सत्यपाल पथिक ने लिखा है-

वह घर से निकलकर किधर को गया था।
महादेव को पाकर खुद खो गया था।।

नि:संदेह उसने खोजा भी और खोया भी। खोया अपनी मूढ़ता, अपनी अज्ञानता, अपनी नासमझी को और पाया उस दिव्य सम्पदा को, उस महादेव को-जो एक है और सर्वज्ञ है। इसी परम विश्वास को, अटूट आस्था को लेकर जीवन को जाना और जिया। मानो, उनका यह दिव्य संदेश था-

उन सफीनों का कभी तूफां कर सकते है क्या ?
जिनका मांझी है खुदा, जिनको खुदा पे मान है।
इंसान की करवट बदलने से, बदलता है जहान।
विश्वास ही इंसान है, विश्वास ही भगवान् है।
मंजिलें चल पड़ती है, उन राहगीरों की तरफ।
दिल में जिनके जोश है, पैरों में जिनके जान है।
इंसान में भगवान् है, भगवान् में इंसान है।।

जैसा विश्वास जैसी अटूट निष्ठा-आस्था एक परमेश्वर व उसकी दिव्य वाणी वेदों के प्रति महर्षि देव दयानन्द सरस्वती की थी- वैसा विश्वास, वैसी निष्ठा-आस्था हममें भी हो- यही शुभकामना तथा मंगल भावना है।

■■ **आचार्य नरेन्द्र 'मैत्रेय'**

- **जो मनुष्य अपनी आत्मा को जानकर परब्रह्म को जानते हैं, वे ही मोक्ष पाते हैं।**
- **मानव-जीवन का एक लक्ष्य, स्तर, एक केन्द्र होना चाहिए जिस स्थान पर पहुंचकर वह अपना जीवन वार सके, अपने धन व माल और बाल-बच्चों को सुविधा से त्याग सके। एक ऐसा स्थान हो, जिस स्थान पर पहुंचकर उसे यह अभिमान (गर्व) हो कि वह यह स्थान नहीं छोड़ेगा। भले ही उसकी जान भी चली जाए, उसकी सन्तान और सम्पदा नष्ट हो जाए, परंतु इस स्थान से वह एक पग भी पीछे नहीं हटाएगा। इस स्थान पर मनुष्य के चरित्र का पता चलता है, वहीं इसका महत्व प्रकट होता है।**

■■ **महात्मा हंसराज**

जीवन के भाव सुख और दुःख

दुःख क्या है, क्यों होता है, इसके कारण क्या हैं, क्यों नहीं हम दुखों को पार पाते हैं। रोग, बुढ़ापा, मृत्यु, चिंता, असंतोष, शोक आदि दु:ख का रूपधारण कर जीवन की खुशी पर ग्रहण लगाते हैं। नानक ने संसार को दु:खी ही देखा और उद्घोषणा कर दी। नानक दुखिया सब संसार। बुद्ध ने तो यहां तक कह दिया कि दु:ख में अब तक मनुष्य ने जितने आसू बहाये हैं, वह महासागरों के जल से भी अधिक है क्योंकि जीवन दु:खदायी है, क्षीणता दु:खदायी है, रोग दु:खदायी है, मृत्यु दु:खदायी है, प्रिय का वियोग दु:खदायी है, अप्रिय के साथ संयोग दु:खदायी है और कोई आकांक्षा जिसकी पूर्ति न हो, तो वह भी दु:खदायी है।

अध्यात्म हमें ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि हम जीवन की वास्तविकता को समझ सकें । जीवन सिर्फ तृष्णाओं की पूर्ति हेतु शरीर के साथ ही जीना नहीं है बल्कि अपने को शरीर के धरातल से अलग रखकर जीना ही जीवन की सार्थकता है। तब हम जान पाते हैं कि यथार्थ में प्रबल तृष्णा ही दु:ख का कारण है। इंद्रियों की तृप्ति के प्रबल लालसा ही दु:ख को उत्पन्न करती है।

उपनिषदों के अनुसार जो स्थायी है, वह आनंदमय है और जो क्षणभंगुर है वह दु:खदायी है। श्रीमद्भगवत गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं जब कोई मनुष्य अपने मन में इंद्रियों के विषयों का ध्यान करने लगता है, तो उसके प्रति अनुराग पैदा हो जाता है। अनुराग से इच्छा उत्पन्न होती है और इच्छा से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है, मूढ़ता से स्मृति नष्ट हो जाती है। स्मृति के नष्ट होने से बुद्धि का नाश हो जाता है और बुद्धि के नाश से व्यक्ति नष्ट हो जाता है। इच्छाएं ही मूल है सुख-दु:ख का। इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम इंद्रियों से घृणा करने लगे। इच्छाएं हमें यशस्वी बना सकती हैं या फिर कलंक के गर्त में भी धकेल सकती हैं। इंद्रियों के प्रति समभाव रखना चाहिए। इंद्रियों से घृणा करना भी उतना ही गलत है, जितना उनसे प्रेम करना।

श्रीकृष्ण कहते हैं इंद्रियांरूपी घोडों को रथ में से खोलकर अलग नहीं कर देना है। अपितु मनरूपी लगामों द्वारा उन्हें वश में रखना है। अनुशासित मन वाला मनुष्य जो अपनी इंद्रियों को वश में रखे हुए राग और द्वेष से मुक्त रहकर इंद्रियों के विषय में विचरण करता है, वह आत्मा की पवित्रता को प्राप्त कर लेता है। राजा ययाति की कथा है। ययाति सम्राट था, उसकी सौ रानियां व सौ बेटे थे। ययाति को जब भी मृत्यु लेने आती हर बार राजा ययाति अपने बदले में अपने बेटे को मृत्यु को सौंप देता। इस तरह ययाति की उम्र जब हजार वर्ष की हो गयी तो उसने मृत्यु से कहा, अब मैं चलने को तैयार हूं इसलिए नहीं कि मेरी इच्छाएं पूरी हो गई है, इच्छाएं तो वैसी की वैसी ही अधूरी हैं, परंतु एक बात स्पष्ट हो गई है कि इच्छाएं कभी पूरी नहीं हो सकती। इच्छाओं का भिक्षा पात्र कभी नहीं भरेगा। इसमें तली नहीं है, जितना भर लो यह खाली का खाली ही रहेगा।

ययाति की कथा से इतना तो स्पष्ट होता ही है कि तृष्णा से मुक्ति ही जीवन को सुखमय और सुगंधित बना सकती है। बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर सभी ने एक ही बात पर बल दिया कि जितने भी दोष, पाप, दु:ख पैदा होते हैं, वे सभी संसार के राग से ही पैदा होते हैं और जितना सुख, शांति मिलती है वह सब रागरहित होने से ही मिलती है। आज हमारा नितांत भौतिकतावादी दृष्टिकोण हमें हमारे अध्यात्म से ही दूर करता जा रहा है। मानव के अध्यात्म से दूर होने के कारण ही उसकी दु:ख सहने की क्षमताएं कम होती जा रही हैं। रोजमर्रा की भागदौड़ भरी जिंदगी में छोटी-छोटी विफलताओं पर दु:ख का बोझ अब कुछ ज्यादा ही महसूस होने लगा है। अप्राप्य वस्तु की अभिलाषा और उसे पाने के समयांतर में तनाव इतना बढ़ जाता है कि व्यक्ति इससे बचने हेतु अध्यात्म के बजाए मौत को चुनता है।

मनोवैज्ञानिकों का तर्क है कि दुनिया की 70 प्रतिशत बीमारियों के लिए लोग स्वयं जिम्मेदार हैं। इन विषम स्थितियों में अध्यात्म ही एकमात्र सहारा है जो दु:ख के उन पलों में मरहम का कार्य करता है, जब चारों ओर से व्यक्ति हैरान, परेशान तथा अपने आपको मुसीबतों से घिरा पाता है। अध्यात्म की तरफ लौटना दु:ख को समाप्त करना नहीं अपितु यह हमें ऐसी अंतरदृष्टि प्रदान करता है हम जान सकें कि प्रत्येक वह वस्तु सुखात्मक अनुभूति की परिचायक है, हमारे पास है, उसके खो जाने की चिंता एवं भय ही दु:ख का मूल है। सुख और दुख तो जीवन का चक्र है। हर सुख के बाद दु:ख का और हर दु:ख के बाद सुख विशेष आमंत्रण है। अध्यात्म हमें सक्षम बनाता है जिससे हममें सुख एवं दु:ख के प्रति समभाव उत्पन्न होने लगता है। इस स्थिति में मनुष्य राग, भय और क्रोध से मुक्त हो जाता है, तब वह मनुष्य स्थिर बुद्धि मुनि कहलाता है।

■ **सुरजीत सिंह गांधी**

YOGA'S SUTRAS

Article By - Dr. Varun Malhotra

Yoga is called the science of realization. It presents the practical path of developments ofone's personality. It promotes health and im-proves the quality of life (Yoga Chitt Nirog) Yoga means Yoking or joining. TheUnion of ermbodied vital force with the universalenergy. Patanjali, the 220 B. C. sage, wrote "Yoga Sutras".

According to him Yamas, Niyamas, Asanas, Pranayama, Dharna, Dhyana and Samadhiare the eight steps of Yoga for selfrealisation. Nonviolence (Ahinsa), Truthfulness (Satya) Not stealing. (Asteya) Celibacy (Brahmacharya) and not hoarding, are the five parts of YamasPurity (Shaucha), Contentment (Santosha). Austerity (Tapas), Understanding self bystudy and surrender to god are the five parts of Niyamas.Yamas are cormmitments at the intellectual level. Niyamas are commitments at the emotionallevel, They are ten commandents, which if fol-lowed faithfully, give supreme peace. Asanas are a set of comfortable body pos-tures. These postures are designed afterstudy of numerous plants and animals. Pranayamas are breathing disciplines Pratyahara is concentrating on one's senseorgans Dharna is exercising control through con-centration on one aspect of self-existence ata time. Samadhi is the final stage of gaining controlover one's sense organs. One is able tocontrol the mind run by a chariot of fivehorses our sense organs.

Some people hold the misconceptions that yoga comprises of a set of physical exercises merely to reduce weight, look slim andtrim. Similarly, that yoga is meant only for thesaints residing in the jungles and Himalayas. This is not true, Yoga is meant for all classes ofthe society. They help lead a balanced life evenin this modern era of "jet age" These exercises consume little energy while energizing the body making the yogi lookradiantly afresh, attractive and young. Fickleminds are transformed into sharp concentrtedmind, Swamy Dayananda Saraswati has writtenin Satyarth Prakash that for improvement ofones personality A householder should medi-tate at least for 2 hours daily Meditation hasbeen described as an experience that is veryrestful, silent and of heightened alertness oftencharacterizes as blissful, Water purifies theouter limb, right eousness purifies the mind, austerities the soul, and knowledgeof things right earth to God stabilizes theintellect and consecrates it.

A practitioner ofmeditation experiences an immediate sense of tranquility and relaxtion, By tuning the mind with God, who is of all spiritual powers, the practitio-ner is able to inculcate the ability to increase hisown will power, The deep experience of love andpurity as the original attributes of the soul cre-ates an aversion to unhealthy habits. Patientswho have practiced yoga reduce their dosage ofdrugs and regularity of addiction. They developa new faith in the technique and it instills in thema new self-confidence. Thus The person takesa deeper interest and the general habits andways of thoughts are changes where as theinner power keeps on increasing. Yoga medita-tion changes a person' s internal physiologicalresponse to environment or circumstances, thereby allowing a more adaptable response to life pressures. OO

मानव शरीर एक यज्ञ वेदी है

उठो दयानन्द के सिपाहियों समय पुकार रहा है ।
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुकार रहा है ।।

उठो विश्व की सूनी आखें काजल मांग रही है ।
उठो अनेकों द्रुपद सुताएं आंचल मांग रही हैं ।।
मरघट का पनघट सा कर दो जग को प्यास बुझा दो ।
भटक रहे जो मरुस्थलों में उनको राह दिखा दो ।।
गले लगा लो उनको जिनको जग दुत्कार रहा है ।।

तुम चाहो तो पत्थर को भी मोम बना सकते हो ।
तुम चाहो तो खारे जल को सोम बना सकते हो ।।
तुम चाहो तो बंजर में भी बाग लगा सकते हो ।
तुम चाहो तो पानी में भी आग लगा सकते हो ।।
जातिवाद जग की नस-नस में जहर उतार रहा है ।।

याद करो क्यों भूल गये जो ऋषि को वचन दिया था ।
शायद वादा याद नहीं जो आपने कभी किया था ।।
वचन दिया था ओ३म् पताका कभी न झुकने देंगे ।
हवनकुण्ड की अग्नि घरों से कभी न बुझने देंगे ।।
लहू शहीदों का गद्दारों को धिक्कार रहा है ।।

कब तक आंख बचा पाओगे आग बहुत फैली है ।
उजली-उजली दिखने वाली हर चादर मैली है ।।
लेखराम का लहू पुकारे आंख जरा तो खोलो ।
एक बार मिलकर सारे ऋषि दयानन्द की जय बोलो ।।
वेदज्ञान का व्यथित सूर्य अब तुम्हें निहार रहा है ।।

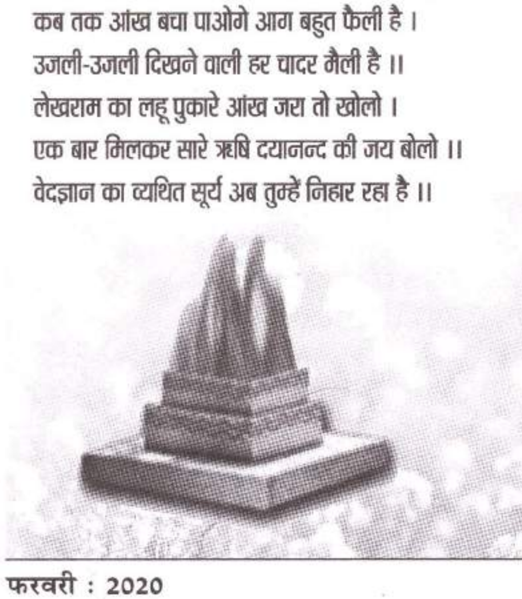

ऋषिवर दयानन्द

घर द्वार तजके परिवार तजके, योगी आया निराला गुजरात से।
प्यार माता-पिता का छोड़ा, सर्व संसार से नाता जोड़ा
सबको अपना मान के परिवार जान के, योगी आया निराला गुजरात से॥

सच्चा वेदों का मार्ग दिखाया, प्रभु निराकार हमको बताया
पाखण्ड पोल खोल के वेद ध्वनि बोल के, योगी आया निराला गुजरात से॥

मान नारी का जग में बढ़ाया, लाखों पतितों को पानव बनाया।
जात-पांत तोड़ के सबको साथ जोड़ के, योगी आया निराला गुजरात से॥

सत्यम को ऋषि ने अपनाया, हम सोतों को मान जगाया।
वेद भाषण करके और प्रकाश करके , योगी आया निराला गुजरात से॥

करना है निर्माण

करना है निर्माण हमें तो करना है।
आर्य राष्ट्र निर्माण, हमें तो करना है।।
देश में जन्म लिया है तूने, मां का दूध पीया है तूने।
जीवन अपना दान हमें तो करना है।।
कहां गई वो तेरी जवानी, खून तेरा क्या बन गया पानी।
कष्ट महान आसान हमें तो करना है।
आर्यावर्त के टुकड़े हो रहे, आर्यवीर तुम क्यों सो रहे।
भारत का उत्थान हमें तो करना है।
ऋषि ने जो मार्ग दिखलाया, श्रद्धानन्द ने है अपनाया।
लेखराम बलिदान हमें तो करना है।
वीरों अब घर-घर जाकर, सोया आर्य फिर से जगाकर।
वेद पढ़ो अभियान हमें तो करना है।

➲ आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

दिशा-शूल : शुभ अशुभ...

सुरेंद्र कुमार रैली

अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली

हर रोज अखबारों आदि में यात्रा लाभ, दिशा-शूल बताई जाती है। असल में दिशा हमें भूगोल मौसम और मार्ग को समझने में सहायता प्रदान करती है। न कि वह शुभ-अशुभ होगी, यदि विशेष दिन में दिशा विशेष में नहीं जाना चाहिए तो उस दिशा में जाने वाली सभी मोटरें, कारें, ट्रक, रेलगाड़ियां और वायुयान बंद कर देने चाहिए, परंतु हम देखते हैं कि रेलें और मोटरें प्रतिदिन प्रत्येक दिशा में जाती है। यदि दिशा-शूल का कोई प्रभाव होता तो उस दिन गाड़ियों की टक्कर होकर सारे यात्रियों की मृत्यु हो जानी चाहिए थी। क्या यह सीधे तौर पर व्यापार नहीं है? सोचिये! यदि कोई हमें पूर्व दिशा में आज जाने से मना करे और किसी कारण हमारे किसी प्रिय के साथ अप्रिय घटना हो जाये और यदि नजदीकी अस्पताल पूर्व दिशा में हो तो हम क्या वहां नहीं जायेंगे?

नवग्रह पूजा : एक 50 ग्राम का पत्थर लीजिये उसे ज्योतिषी से 10 फिट रखिये। उसे कहिये कि आप मंत्रों की सहायता से इस पत्थर की दिशा या स्थान बदल दीजियें, यदि वह नहीं बदल पाए तो सोचिये कि पृथ्वी से करोड़ों मील दूर के विशालकाय ग्रह की दिशा कैसे बदली जा सकती है? अंधविश्वास की कतार में यह भी एक बहुत बड़ा अंधविश्वास है जिसके कारण कमजोर मन के लोगों से सालाना करोड़ों-अरबों रुपया लूटा जा रहा है। सामान्य तौर पर इन ग्रहों से डराया जाता रहा है। जिनमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुद्ध बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू और केतू जबकि विज्ञान में राहू और केतू तो ग्रह ही नहीं है। लेकिन इसके बाद भी यह काल्पनिक ग्रह आज लोगों के मन में इस तरह घर कर गये कि इनसे बचने के लिए तमाम तरह की पूजा और पैसे बहाए जा रहे है। क्या इन ग्रहों को पैसे की जरूरत हैं? आज के युग में जब इंसान चांद पर उतर चुका है मंगल पर यान उतार चुका है और भविष्य में मंगल ग्रह पर स्वयं उतरेगा ऐसे युग में ग्रहों का डर इस कदर हावी है कि व्यक्ति ग्रहों को ठीक करने के लिए एक ऐसे ज्योतिषी के द्वार पर बैठे रहते हैं जिन्हें खुद का पता नहीं होता तो करोड़ों मील दूर के ग्रहों का भय क्यों?

भूत-प्रेत का भ्रम : देश से बाहर जितने लोग बम विस्फोट या बीमारी से मरते हैं उससे कहीं अधिक तो हमारे यहां भूत-प्रेत, जादू टोना, डायन आदि के नाम पर मर जाते हैं। हमें भूत-प्रेत आदि से डर क्यों लगता है? हमारा अवचेतन मन कभी-कभी भय पैदा करता है इसे आप मनोविज्ञान की दृष्टि से भी जान सकते है अपने चेतन मन के साथ खड़े रहिये इसके बाद खड़े किये गये काल्पनिक भय निकट नहीं आयेंगे! भूत-प्रेत के साथ-साथ डायन व चुड़ैल के नाम से भी अंधविश्वास फैला हुआ है। जो गरीब व अनपढ़ युवतियों को, महिलाओं को ज्यादा परेशान कर रहा होता है, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। OO

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 26 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा

जन्म दिवस : शहीद सोहनलाल जी

भारत की स्वतन्त्रता के लिए देश ही नहीं विदेशों में भी प्रयत्न करते हुए अनेक वीरों ने बलिदान दिये हैं। सोहनलाल पाठक इन्हीं में से एक थे। उनका जन्म पंजाब के अमृतसर जिले के पट्टी गांव में 7 जनवरी, 1883 को श्री चंदाराम के घर में हुआ था। पढ़ने में तेज होने के कारण उन्हें कक्षा पांच से मिडिल तक छात्रवृत्ति मिली थी। मिडिल उत्तीर्ण कर उन्होंने नहर विभाग में नौकरी कर ली। फिर और पढ़ने की इच्छा हुई, तो नौकरी छोड़ दी। नार्मल परीक्षा उत्तीर्ण कर वे लाहौर के डी.ए.वी. हाईस्कूल में पढ़ाने लगे।

एक बार विद्यालय में जमालुद्दीन खलीफा नामक निरीक्षक आया। उसने बच्चों से कोई गीत सुनवाने को कहा। देश और धर्म के प्रेमी पाठक जी ने एक छात्र से वीर हकीकत के बलिदान वाला गीत सुनवा दिया। इससे वह बहुत नाराज हुआ। इन्हीं दिनों पाठक जी का सम्पर्क स्वतंत्रता सेनानी लाला हरदयाल से हुआ। वे उनसे प्रायः मिलने लगे। इस पर विद्यालय के प्रधानाचार्य ने उनसे कहा कि यदि वे हरदयाल जी से सम्पर्क रखेंगे, तो उन्हें निकाल दिया जाएगा। यह वातावरण देखकर उन्होंने स्वयं ही नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

जब लाला लाजपतराय जी को यह पता लगा, तो उन्होंने सोहनलाल पाठक को ब्रह्मचारी आश्रम में नियुक्ति दे दी। पाठक जी के एक मित्र सरदार ज्ञानसिंह बैंकाक में थे। उन्होंने किराया भेजकर पाठक जी को भी वहीं बुला लिया। दोनों मिलकर वहां भारत की स्वतंत्रता की अलख जगाने लगे, पर वहां की सरकार अंग्रेजों को नाराज नहीं करना चाहती थी, अतः पाठक जी अमरीका जाकर गदर पार्टी में काम करने लगे। इससे पूर्व वे हांगकांग गये तथा वहां एक विद्यालय में काम किया। विद्यालय में पढ़ाते हुए भी वे छात्रों के बीच प्रायः देश की स्वतंत्रता की बातें करते रहते थे।

हांगकांग से वे मनीला चले गये और वहां बंदूक चलाना सीखा। अमरीका में वे लाला हरदयाल और भाई परमानन्द के साथ काम करते थे। एक बार दल के निर्णय के अनुसार उन्हें वर्मा होकर भारत लौटने को कहा गया। बैंकाक आकर उन्होंने सरदार बुढ्ढा सिंह और बाबू अमरसिंह के साथ सैनिक छावनियों में सम्पर्क किया। वे भारतीय सैनिकों से कहते थे कि जान ही देनी है, तो अपने देश के लिए दो। जिन्होंने हमें गुलाम बनाया है, जो हमारे देश के नागरिकों पर अत्याचार कर रहे हैं, उनके लिए प्राण क्यों देते हो? इससे छावनियों का वातावरण बदलने लगा।

पाठक जी ने स्याम में पक्कों नामक स्थान पर एक सम्मेलन बुलाया। वहां से एक कार्यकर्ता को उन्होंने चीन के चिपिनटन नामक स्थान पर भेजा, जहां जर्मन अधिकारी 200 भारतीय सैनिकों को वर्मा पर आक्रमण के लिए प्रशिक्षित कर रहे थे। एक दिन पाठक जी गुप्तरूप से जब फौज के जवानों को देशभक्ति और अंग्रेजों के विरुद्ध मरने-मारने का पाठ पढ़ा रहे थे, अचानक एक भारतीय जमादार ने उनका दायां हाथ पकड़ लिया और अपने अफसर के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए ले जाने का बलात् प्रयास करने लगा। पाठकजी को यह आशंका न थी। उन्होंने जमादार को काफी समझाया पर वह नहीं माना। यद्यपि पाठकजी उस समय सशस्त्र थे, जमादार का काम तमाम कर सकते थे। लेकिन एक भारतीय भाई का खून अपने हाथों से बहाना उन्होंने उचित नहीं समझा। उन्हें लगा कि इस कृत्य से उनका क्रांतिकारी संगठन कलंकित हो जायेगा। वे स्वयं गिरफ्तार हो गए। मुकदमा चला और उन्हें फांसी की सज़ा सुनाई गयी।

जेल में उन्होंने कभी जेल के नियमों का पालन नहीं किया। उनका तर्क था कि जब अंग्रेज नियमों को नहीं मानते तो उनके नियमों का बंधन कैसा? वर्मा के गवर्नर जनरल ने जेल में उनसे कहा- 'अगर तुम क्षमा मांग लो तो फांसी रद्द की जा सकती है।' पाठकजी ने जवाब दिया- 'अपराधी अंग्रेज हैं, क्षमा उन्हें मांगनी चाहिए, देश हमारा है। हम उसे आजाद कराना चाहते हैं। इसमें अपराध क्या है?' यद्यपि उन्होंने किसी को मारा नहीं था, पर शासन विरोधी साहित्य छापने तथा विद्रोह भड़काने के आरोप में उन पर मुकदमा चला। उनके साथ पकड़े गये मुस्तफा हुसैन, अमरसिंह, अली अहमद सादिक तथा रामरक्खा को कालेपानी की सजा दी गयी, पर पाठक जी को सबसे खतरनाक समझकर 10 फरवरी, 1916 को मातृभूमि से दूर वर्मा की मांडले जेल में फांसी दे दी गयी। वर्मा जेल के रिकॉर्ड बताते हैं कि फांसी के समय पाठकजी ने जल्लाद के हाथों से फांसी का फंदा छीन कर स्वयं अपने गले में डाल लिया था।

किसी कवि ने ऐसे ही जांबाजों के लिए कहा है कि- गर्दन अब हाथ से अपने ही कटानी है हमें, मादर-ए-हिंद पे यह भेंट चढ़ानी है हमें, किस तरह मरते हैं अहरार-ए-वतन भारत पर, सारे आलम को यही बात दिखानी है हमें ।। मैं शहीद सम्मान स्मृति मचं की तरफ से शत्-शत् नमन करता हूं!!

जय हिंद...जय भारत माता!!

■■ विक्रम सिंह डाला

समाचार - सूचनाएं

- 11 जनवरी लाल बहादुर शास्त्री स्मृति दिवस। 23 जनवरी नेता जी सुभाषचंद्र बोस जन्म दिवस। 28 जनवरी लाला लाजपत राय जयंती। 30 जनवरी महात्मा गांधी पुण्यतिथि-सभी महापुरुषों को आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा याद किया गया।

- दिल्ली आर्य केंद्रीय सभा के प्रकाशन विभाग द्वारा विश्व पुस्तक मेला में स्टॉल लगाए गए, जहां जिज्ञासुओं का शंका समाधान भिन्न-भिन्न आर्य विद्वानों द्वारा किया गया। कई वैदिक साहित्य के अलावा करीब 55000 प्रचारार्थ सत्यार्थ प्रकाश (महर्षि दयानन्द सरस्वती का कालजयी ग्रंथ) 10 रुपये में बांटे गए, जिसके लिए आर्यजनों का सहयोग प्राप्त हुआ।

- आर्य समाज गांधी धाम गुजरात का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें कई विद्वानों, नेताओं ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

- 26 फरवरी 71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर भव्य कार्यक्रम आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के प्रांगण में आयोजित किया गया। जिसमें प्रधान जी द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात् ब्रह्मचारियों द्वारा कविता पाठ, भाषण प्रस्तुत किये।

- 15 से 21 फरवरी टंकारा, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा बोधोत्सव का भव्य कार्यक्रम हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्यरत्न श्री पूनम सूरी डीएवी के प्रधान रहेंगे। आप सभी सादर आमंत्रित हैं!!

- 18 फरवरी को 196वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन केंद्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा श्रीमती लेखी के निवास स्थान पर किया जाएगा।

- 21 फरवरी को स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध दिवस के अवसर पर विशाल ऋषि मेला दिल्ली में रामलीला मैदान में दिल्ली सभा के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है।

- **गुरुकुल वेद विद्यालय गौतमनगर, नई दिल्ली का भव्य वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न :** गुरुकुल वेद विद्यालय गौतमनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद पारायण यज्ञ गत् 16 दिसम्बर, 2019 से प्रारम्भ होकर 5 जनवरी, 2020 को सम्पन्न हो गया। वर्षिकोत्सव की पूर्णाहुति के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. महावीर मीमांसक, राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. आनंद कुमार पूर्व अईपीएस, स्वामी श्रद्धानन्द, कै. रुद्रसेन, श्री आनंद चौहान, श्री योगेश मुंजाल, श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक श्री महेन्द्र मोदी, डॉ. सुकामा आचार्या, डॉ. नरदेव यजुर्वेदी, श्री सुरेश पाल अहलावत अमेरिका आदि विशिष्ट विद्वान एवं गणमान्य महानुभाव मंच पर उपस्थित थे। यज्ञ के ब्रह्मा पद को युवा विद्वान डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने सुशोभित किया और गुरुकुल के संचालक एवं आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने सभी अतिथियों का अभिवादन किया। मंच का संचालन प्रसिद्ध युवा विद्वान डॉ. रविन्द्र कुमार एवं गुरुकुल के प्राचार्य श्री प्रियव्रत शास्त्री ने अत्यंत कुशलता के साथ संभाला। उत्सव की व्यवस्था में श्री रामपाल शास्त्री, आचार्य धनंजय गुरुकुल पौंधा, श्री सोमदेव शास्त्री, श्री निखिल कुमार रिसर्च स्कालर, श्री भूपेश कुमार शास्त्री, श्री जितेन्द्र पुरुषार्थी, डॉ. अजीत कुमार, आचार्य योगेन्द्र उपाध्याय, आचार्य बुद्धदेव, आचार्य जयकुमार, डॉ. अजय कुमार शास्त्री, डॉ. कंवर सिंह शास्त्री ने विशेष भूमिका निभाई। 21 दिन तक इस चतुर्वेद पारायण यज्ञ के दौरान आयोजित महिला सम्मेलन, बलिदान सम्मेलन, गुरुकुल सम्मेलन एवं आर्य सम्मेलन आदि में अनेक विद्वानों ने जनता का मार्गदर्शन किया।

विनम्र श्रद्धांजलि

भजनोपदेशक श्री बृजपाल कर्मठ का निधन : आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री बृजपाल कर्मठ जी का 13 दिसम्बर 2019 को प्रातः 5 बेज लगभग 91 वर्ष की आयु में उनके पैतृक गाव कमहेड़ा, मुजफ्फरनगर में निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार गांव में ही पूर्ण वैदिक रीति के किया गया। वे अपने पीछे धर्मपत्नी, एक सुपुत्री एवं एक सुपुत्र का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

श्री सुभाष कोहली जी को पत्नीशोक : आर्यजगत के सुप्रसिद्ध प्रकाशक-आर्य प्रकाशन के प्रमुख श्री सुभाष कोहली जी की धर्मपत्नी श्रीमती किरण कोहली जी का दिनांक 2 जनवरी 2020 को अकस्मात निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रहीं थीं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सभा के वैदिक धर्म प्रचारकों द्वारा पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 5 जनवरी 2020 को आर्यसमाज प्रीति विहार में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ उनके परिवार एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के पूर्व प्रधान श्री गजानन्द आर्य जी नहीं रहे : आर्यसमाज के निष्ठावान मनीषी, लेखक, विचारक और महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान और वर्तमान संरक्षक माननीय श्री गजानन्द आर्य का सोमवार 6 जनवरी 2020 को 90 वर्ष की अवस्था में बैंगलोर में निधन हो गया है। वे लगभग 40 वर्षों से परोपकारिणी सभा, अजमेर के सदस्य, मंत्री, प्रधान और वर्तमान में संरक्षक के रूप में अहर्निश वैदिक जीवन पद्धति और आर्यसमाज की चिन्तन मनीषा के आराधक, उपासक, संवर्धक और संरक्षक रहे। यह कथन अतिशयोक्ति नहीं होगा कि आप जिस भी पद पर रहे, आपकी उपस्थिति से वह पद गौरवान्वित हुआ। आपकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं था। इससे बड़ा गौरव क्या होगा कि आर्यसमाज के दिग्गज मनीषी व यशस्वी विद्वान स्वर्गीत आचार्य प्रो. धर्मवीर जी सार्वजनिक रूप से आपको चरण स्पर्श पूर्वक प्रणाम करते थे। एक विख्यात उद्योगपति के रूप में आपने कलकत्ता में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त की। राजस्थान के शेरडा गांव में श्री लालमन आर्य के घर आपने 9 अगस्त 1930 को आंखें खोली। बाल्यकाल से ही मेधावी और प्रतिभावान आर्य जी का परिवार आर्य सिद्धांतों में दीक्षित था। आपने सामाजिक कुरीतियों का पारिवारिक एवं सामाजिक रूप से कठोर विरोध किया। मृतक भोज, विधवा विवाह एवं अन्य कुरीतियों के निवारण के लिए आपने बहुत कार्य किये। एक लेखक के रूप में भी आपने आर्य समाज की वैचारिक दृढ़ता, सांस्कृतिक प्रतिष्ठा और हृदय की उच्चता का भाव व्यक्त होता था। आपका निधन आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के साथ सम्पूर्ण देश के लिए अपूरणीय क्षति है।

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा
के सदस्यों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

आज के वातावरण में सुख पूर्वक जीवन जीना सरल नहीं है, बहुत कठिन है। इसके लिए कठिन तपस्या करनी पड़ती है। प्रायः लोग तपस्या करने से घबराते हैं। वे तपस्या करना नहीं चाहते और शॉर्टकट मांगते हैं, कि जीवन बहुत अच्छा सुखदायक चले, इसका कोई शॉर्टकट बताएं। परंतु यह उनकी भूल है। जीवन शॉर्टकट से अच्छा नहीं बनता, पुरुषार्थ से बनता है। अगर कोई व्यक्ति आपसे कहे कि मुझे आईएएस की डिग्री लेनी है, इसका कोई शॉर्टकट बता दीजिए. तो आप बता पाएंगे ? नहीं न! बस यही मैं भी कहता हूं। यदि आपको सुख चाहिए, ऊंची योग्यता चाहिए, उत्तम सुख साधन चाहिए, तो उसका कोई भी शॉर्टकट नहीं है। लोग शॉर्टकट अपनाकर जीवन को सरल बनाना चाहते हैं, ऐसा करने से जीवन सरल तो नहीं बनता, बल्कि और अधिक कठिन हो जाता है। समस्याएं और अधिक बढ़ जाती हैं। इसलिए शॉर्टकट की खोज न करें, सत्य की खोज करें। सत्य ही से सुख मिलता है। तो जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करें, उनसे संघर्ष करें, चुनौतियों को जीतें। तब जीवन सुखमय बनेगा। ईश्वर से बल की प्रार्थना करें, वह आपको बल ज्ञान विद्या बुद्धिमत्ता पुरुषार्थ आदि गुण प्रदान करे। जिससे आप शॉर्टकट को छोड़कर सही रास्ता अपना सकें, और अपने जीवन को सुखी बना सकें।

■■ स्वामी विवेकानंद परिव्राजक

खांसी जुकाम को कहें अलविदा

खांसी-जुकाम हर बदलते मौसम के साथ आने वाली समस्या है। खांसी बैक्टीरियल या वायरल इन्फेक्शन, एलर्जी, साइनस इन्फेक्शन या ठंड के कारण हो सकती है लेकिन हमारे देश में हर परेशानी के लिए लोग डॉक्टरों के पास नहीं जाते। हमारे ही किचन में कई ऐसे नुस्खे छिपे होते हैं जिनसे खांसी-जुकाम जैसी छोटी-मोटी बीमारियां फुर्र हो जाती हैं। तो आइए मैं आपको बताते हैं खांसी-जुकाम को कैसे कहें अलविदा..

गर्म पानी और नमक से गरारे

गर्म पानी में चुटकी भर नमक मिला कर गरारे करने से खांसी-जुकाम के दौरान काफी राहत मिलती है। इससे गले को राहत मिलती है और खांसी से भी आराम मिलता है। यह भी काफी पुराना नुस्खा है।

हल्दी वाला दूध

बचपन में सर्दियों में नानी-दादी घर के बच्चों को सर्दी के मौसम में रोज हल्दी वाला दूध पीने के लिए देती थी। हल्दी वाला दूध जुकाम में काफी फायदेमंद होता है क्योंकि हल्दी में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं जो कीटाणुओं से हमारी रक्षा करते हैं। रात को सोने से पहले इसे पीने से तेजी से आराम पहुचता है. हल्दी में एंटी बैक्टीरियल और एंटी वायरल प्रॉपर्टीज मौजूद रहती है जो की इन्फेक्शन से लडती है. इसकी एंटी इंफ्लेमेटरी प्रॉपर्टीज सर्दी, खांसी और जुकाम के लक्षणों में आराम पहुंचाती है।

मसाले वाली चाय

अपनी चाय में अदरक, तुलसी, काली मिर्च मिला कर चाय का सेवन कीजिए। इन तीनों तत्वों के सेवन से खांसी-जुकाम में काफी राहत मिलती है।

काली मिर्च

खांसी के साथ बलगम भी है तो आधा चम्मच काली मिर्च को देसी घी के साथ मिलाकर खाएं। आराम मिलेगा।

शहद और ब्रांडी

ब्रैंडी तो पहले ही शरीर गर्म करने के लिए जानी जाती हैं। इसके साथ शहद मिक्स करने से जुकाम पर काफी असर होगा।

आंवला

आंवला में प्रचुर मात्रा में विटामिन-सी पाया जाता है जो खून के संचार को बेहतर करता है, इसमें एंटी-ऑक्सीडेंट्स भी होते हैं।

अदरक और नमक

अदरक को छोटे टुकड़ों में काटें और उसमें नमक मिलाएं। इसे खा लें। इसके रस से आपका गला खुल जाएगा और नमक से कीटाणु मर जाएंगे।

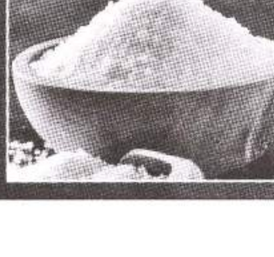

अदरक-तुलसी

अदरक के रस में तुलसी मिलाएं और इसका सेवन करें। इसमें शहद भी मिलाया जा सकता है।

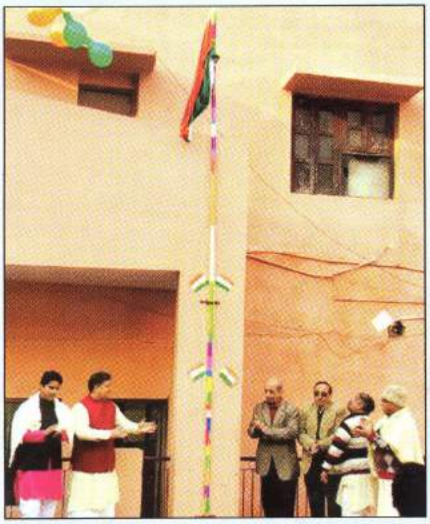

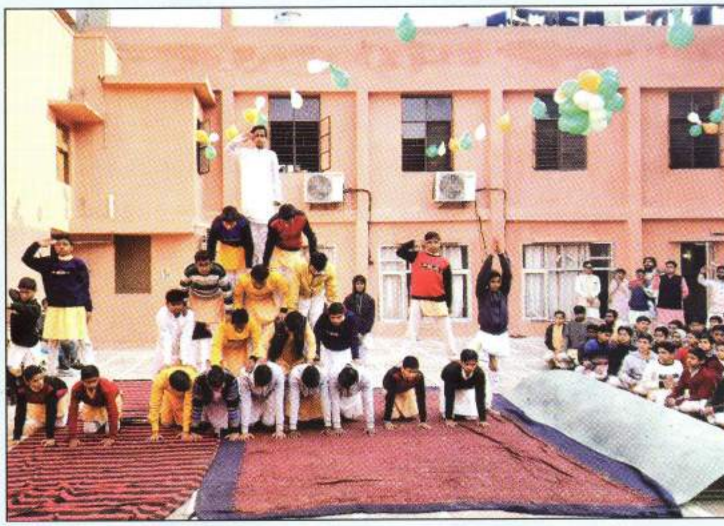

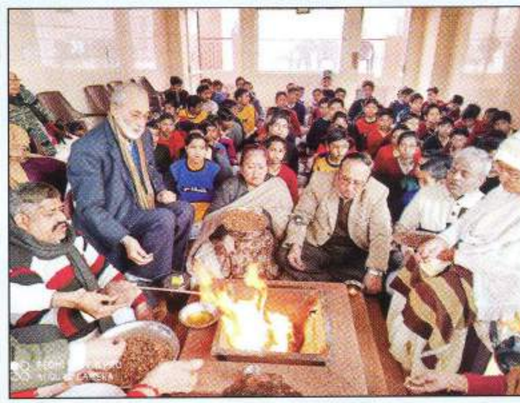

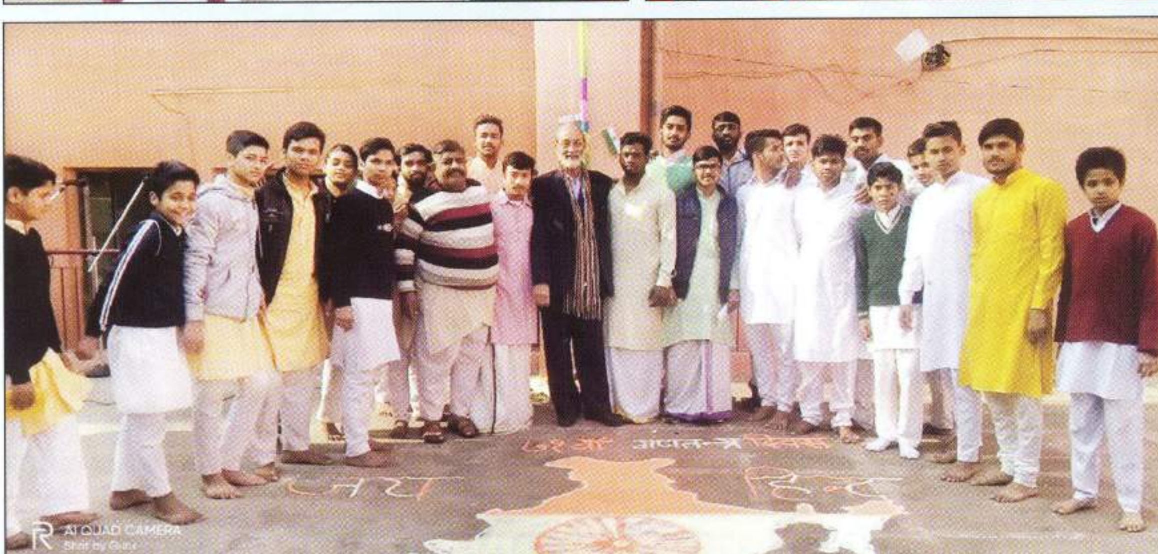

71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा में ध्वजारोहण के पश्चात ब्रह्मचारियों द्वारा अनेक कार्यक्रम और हवन किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के अधिकारी, आचार्यगण, ब्रह्मचारी और अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Date of Dispatch 12&13 Every Month

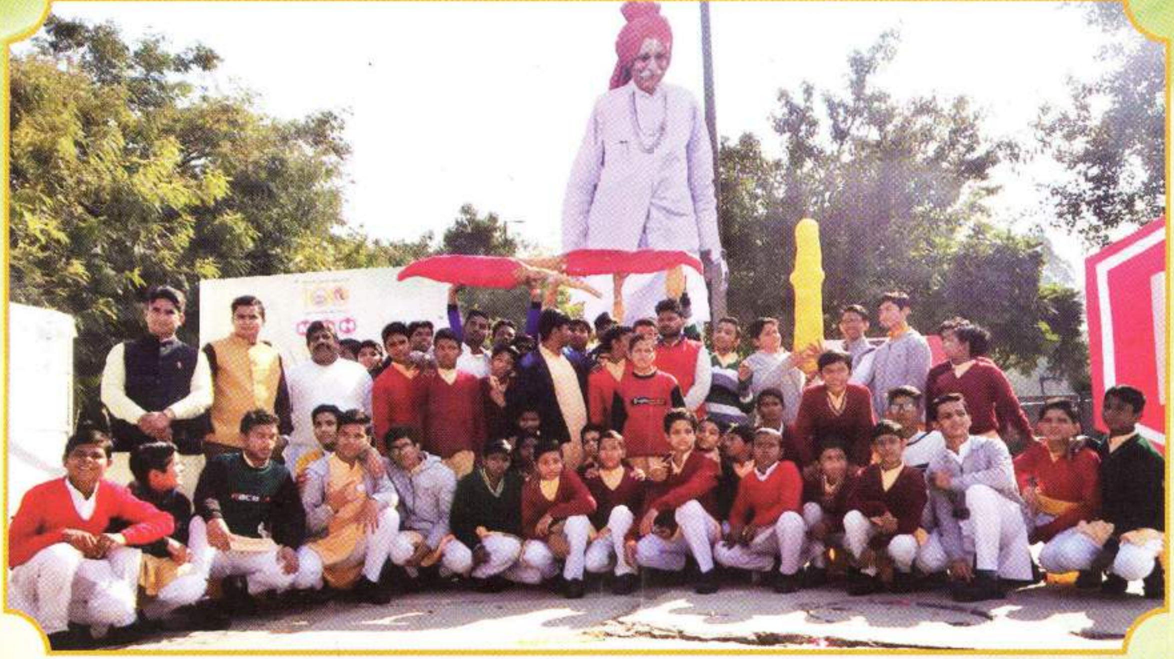

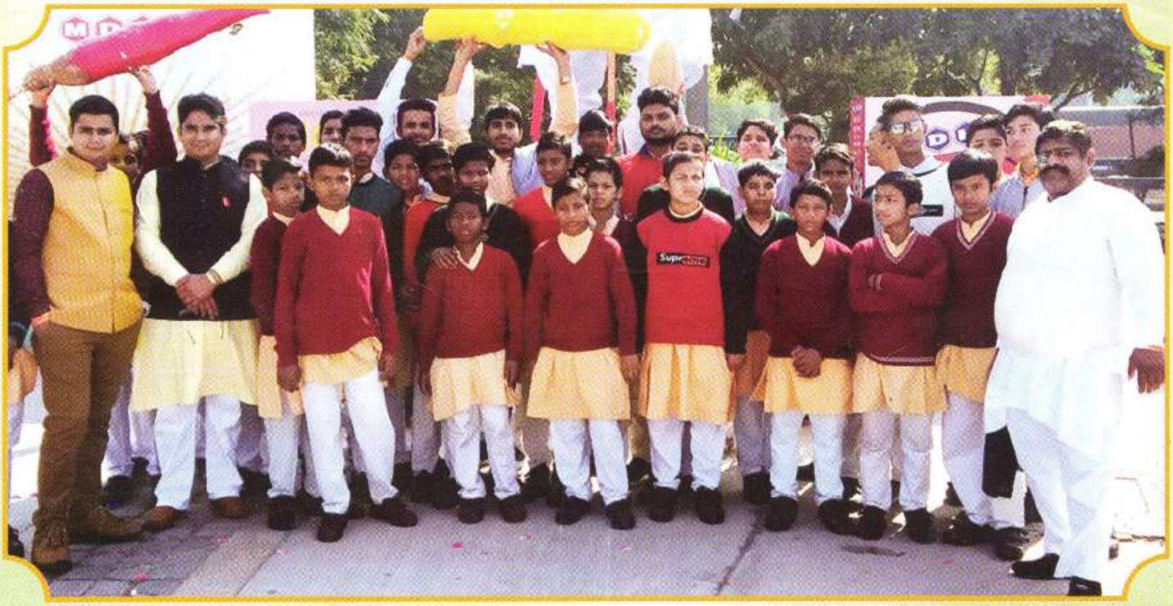

आर्य जगत के भामाशाह कई गुरुकुलों के व्यवस्थापक केंद्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी (MDH) समूह के 100 वर्ष पूर्ण होने पर एक भव्य कार्यकार्य आयोजित किया गया। उसी अवसर पर इंदिरा गांधी स्टेडियम दिल्ली में आर्ष गुरुकुल नोएडा के आचार्यगण एवं ब्रह्मचारी।

ओ३म् **विश्ववारा संस्कृति** ओ३म्

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221